ज्ञान-निर्झर

संत डोंगरे जी

श्री गुरुः शरणम्

''श्रीकृष्णः शरणं मम''

ज्ञान-निर्झर

(सद्विचार-संहिता)
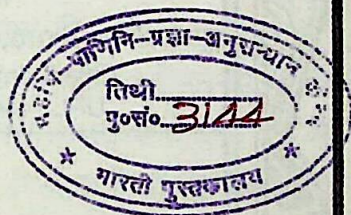
परमपूज्य संत डोंगरेजी महाराज

('भागवत रहस्य' से संकलित)

ए-4, रिंग रोड़, साउथ एक्सटेन्शन, भाग-1, नई दिल्ली-110049
दूरभाष: 24636010, 30 फैक्स: (91-11) 24636011

प्रकाशक

ए-4, रिंग रोड़, साउथ एक्सटेन्शन, भाग-1
नई दिल्ली-110049
दूरभाष: 24636010, 30 फैक्स: (91-11) 24636011
Email : info@neetaprakashan.com
URL : www.neetaprakashan.com

क्या करें, क्या न करें

परिवार, समाज तथा संसार में एक सद्नागरिक एवम् सद्मानव बन कर रहना नितान्त आवश्यक है। जो मनुष्य देश के आचार, तथा जाति-धर्म को तत्त्वतः जान लेता है, उसे उत्तम तथा अधम का, ऊँच तथा नीच का, ग्राह्य तथा त्याज्य का ज्ञान हो जाता है। विवेक-चालित मनुष्य ही सदैव महान जनसमूह पर अपनी प्रभुता स्थापित कर पाता है। लोक शास्त्र में कहा भी गया है कि धर्म का दूसरा नाम 'व्यवहार' है।

हमें वाल्यकाल से नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। समाज तथा संसार में जब धन-लोलुपता, मायावी-आवरण और प्रलोभन-प्रकोप वढ़ जाते हैं तो मन विचलित होने लगता है। यही समस्त समस्याओं की जड़ है। व्यवहार-शास्त्र ने मनुष्य के अनेक गुण गिनवाए हैं, किन्तु इनमें समय एवं स्थिति का अनुमान लगाते हुए, विवेक तथा संतुलित-अनुशासित जीवन-दृष्टि से जीवन-यापन करते हुए, किसी के लिए कष्टप्रद एवं संकटप्रद न वनने की मूल प्रेरणा, मुख्य है।

श्री डोंगरेजी महाराज ने जन-सामान्य को सचेत एवं सजीव बनाए रखने के लिए, जीवन को गतिमान तथा पवित्र बनाए रखने के लिए कुछ मंत्रवत् सूत्र सौंपे हैं। सहज भाव से ही इन सूत्रों को हम यदि अपने जीवन तथा दैनिकचर्या का अंग बना लें, तो जीवन की हाय-तौबा और मारामारी से सहज ही उबर सकते हैं। जीवन जीना बोझ न लगे, आनन्दप्रद बन जाए, यदि हम चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। डोंगरे जी ने वही सन्मार्ग प्रशस्त करते हुए हमें "क्या करें"--यह तो बताया ही, "क्या न करें", यह भी बताया है। आज मनुष्य अपने दुःख से उतना दुःखी नहीं है, जितना दूसरों के सुख को देख कर। अतः लोक-विरुद्ध आचरण अनुचित है। प्रतिष्ठित संत श्रद्धेय श्री डोंगरेजी महाराज ने अपने सुदीर्घ जीवनानुभवों तथा विलक्षण संत-दृष्टि से जन-मामान्य को जो मार्ग-दर्शन दिया है, वही
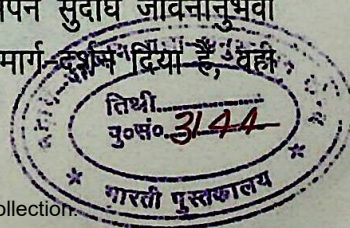
इस पुस्तक का प्राण है। इस दृष्टि से 'ज्ञान-निर्झर' सद्विचार संहिता के रूप में एक दुर्लभ, किन्तु सहज 'विचार-सागर' है। एक अज्ञात किन्तु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नीति-कथन है कि-

यस्मिन् देशे य आचारः स्थाने-स्थाने यथा स्थितिः।
तथैव व्यवहर्तव्यं पारम्पर्यागतो विधिः।।

अर्थात् जिस देश में जो स्थानीय स्थिति तथा आचार विद्यमान हैं, तथा जो परम्परा से प्राप्त विधि है, सदैव उसी का व्यवहार करना चाहिए।

'मौजीराम स्मृति न्याय' का सौभाग्य है कि **संत डोंगरेजी की वाणी** प्रकाशित करने का हमें सुअवसर प्राप्त हुआ। आज जनहित एवं परहित हेतु आत्मदान करने वालों का नितान्त अभाव है। डोंगरेजी ने उस पुण्य मार्ग को पुनः प्रशस्त किया है। हम हृदय से उनके आभारी हैं और भविष्य में भी उनके आशीर्वाद के आकांक्षी हैं। माननीय **श्री कालीचरण केशान** भी संतपुरुष हैं। संततत्त्व के पारखी तथा भगवद्भक्ति को समर्पित श्री केशान का विशिष्ट प्रयास इस पुस्तक की प्रकाशन-प्रेरणा है। इसी क्रम में उज्ज्वलरस को समर्पित प्रियवर **डॉ. पूरनचन्द टण्डन** के भी हम हृदय से आभारी हैं कि उनकी रचनात्मक तथा अनुभवी जीवन एवं समाज-दृष्टि ने इस पुस्तक की प्रकाशन-यात्रा में अपनी अमूल्य भूमिका निभाई है। अन्ततः जन-सामान्य के रूप में अपने उन पाठकों को यह पुस्तक समर्पित है, जो सद्मार्ग की ओर अग्रसर होने का पुण्य-पावन संकल्प लेना चाहते हैं।

नववर्ष की अनन्त-असीम शुभकामनाओं के साथ !

1 जनवरी, 2003

–राधेश्याम गुप्ता
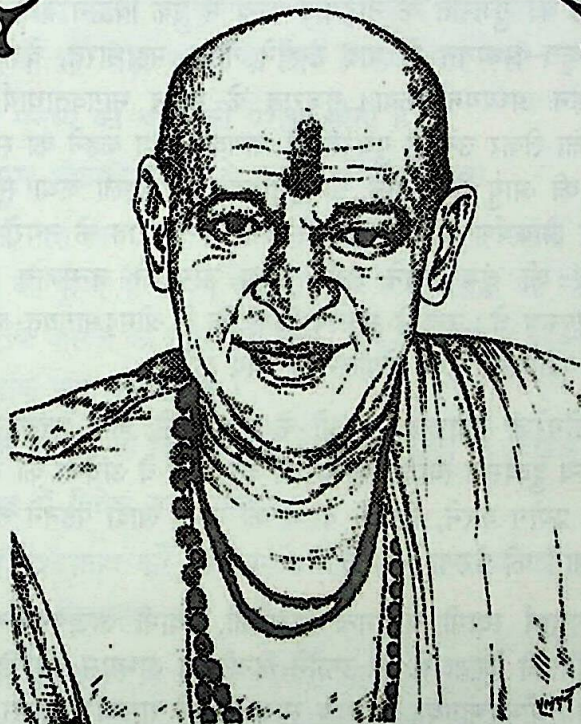
परमपूज्य संत डोंगरेजी महाराज

संत डोंगरेजी महाराज
भक्ति-भागीरथी के प्रवाहक

श्रीमद्भागवत् तथा रामचरितमानस के माध्यम से पूरे देश में भक्ति-भागीरथी प्रवाहित करने वाले संत श्री रामचन्द्र केशव डोंगरेजी महाराज का जन्म 15 फरवरी, 1926 को गुजरात के नड़ियाद कस्बे में एक विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ था। संस्कृत-अध्ययन के बाद उन्होंने गीता, महाभारत, वेदों, उपनिषदों, पुराणों का गहन अध्ययन किया। गुजरात के महान भागवताचार्य श्री नरहरि महाराज से दीक्षा लेकर उन्होंने गुजरती में भागवत कथा कहने का संकल्प लिया। मात्र 14 वर्ष की आयु में उन्होंने श्रीमद्भागवत् की पहली कथा सुनाई। उनकी वाणी में इतना आकर्षण था कि कुछ ही दिनों में गुजरात के नगरों व कस्बों मे उनकी कथाओं की धूम मचने लगी। पूज्य डोंगरेजी जन्मजात विरक्त तथा भक्त-हृदय महापुरुष थे। उन्होंने संकल्प लिया कि वे श्रीमद्भागवत्-कथा से प्राप्त धन का सेवा, परोपकार तथा गोपालन में व्यय करेंगे।

संत डोंगरेजी महाराज कथाओं के माध्यम से, जहां भक्तजनों को मांस, मंदिरा तथा अन्य दुर्व्यसन त्यागने की प्ररेणा देते, वहीं वे अंग्रेजी की जगह संस्कृत तथा हिन्दी का प्रयोग करने, विदेशी वस्त्रों की जगह खादी पहनने तथा भारतीय वेश-भूषा अपनाने की प्रेरणा भी देते थे।

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, स्वामी अखण्डानन्दजी, स्वामी करपात्रीजी आदि की प्रेरणा से ही उन्होंने हिन्दी का अभ्यास कर हिन्दी में कथा सुनानी शुरू की। श्रीमद्भागवत् के साथ-साथ उन्होंने रामचरितमानस की कथा के माध्यम से मार्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र को जन-जन तक पहुँचाया।

उनकी प्रेरणा से आज अनेक अन्न क्षेत्रों, गोशालाओं, संस्कृत विद्यालयों का संचालन हो रहा है। वे नए मंदिर बनाने की जगह पुराने जीर्ण-शीर्ण मंदिरों के उद्धार की भी प्ररेणा देते थे।

डोंगेरजी ने श्रीमद्भागवत् की अंतिम कथा शुक्रताल तीर्थ में की थी। 9 नवम्बर, 1990 को वे अपने इष्टदेव बालकृष्ण के श्रीचरणों में विलीन हो गए।

** अ **

अकेला खाने वाला दरिद्र हो जाता है।

अकेला पुरुष या अकेली स्त्री धर्म-मार्ग में आगे नहीं बढ़ सकते।

अकेले चुपचाप खाना पशुवृत्ति है। दूसरों को दे कर खाओ। थोड़ा हो, तो उसमें से भी थोड़ा दूसरों के लिये निकाल कर रखो।

अक्षर से मनुष्य की बुद्धि की परीक्षा होती है।

अच्छा काम शीघ्रातिशीघ्र करो, उसे स्थगित न करो।

अज्ञान का नाश ज्ञान से होता है। इस ज्ञान को निरन्तर स्थायी रखने के लिये प्राणों को कृष्ण के अर्पण कर दो। जब तक अज्ञान का नाश नहीं होवे. तब तक वासना का नाश नहीं होता। जब तक वासना का नाश नहीं होवे, तब तक पाप नहीं रुकता।

अज्ञान के कारण जो दिखाई नहीं देता, वह ज्ञान से दिखाई देगा।

अति दुःख में विवेक नहीं रहता।

अतिपापी पश्चाताप करे, तो उसके जीवन में एकदम परिवर्तन आयेगा। पापी का तिरस्कार नहीं करो।

अतिपापी को बुढ़ापे में यमदूत नजर आने लगते हैं।

अतिपापी को भी निराश होने की जरूरत नहीं। भगवान् का नाम जपने से पाप नष्ट होते हैं।

अतिसम्पत्ति अनर्थकारी होती है।

अत्यधिक प्रिय वस्तु भगवान् को अर्पित करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं।

अत्यन्त सादा जीवन रखो। जिसका जीवन सादा है, वह अवश्य साधु बनेगा।

अधिक नहीं बोलो। ज्यादा नहीं तो दिन में तीन घंटे मौन रखो। जो वाणी और पानी का दुरुपयोग करता है, वह ईश्वर के प्रति अपराधी है।

अधिक मौजी ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता। आहार अति सात्त्विक होना चाहिए। स्त्रियों के साथ मत रहो। संसार में जितने अनर्थ हुए हैं, वे काम के कारण हुए हैं। कामान्ध में विवेक नहीं रहता।

अधिकारी को प्रभु के प्रथम दर्शन स्वप्न में ही होते हैं।

अधिकारी गुरु से मंत्र-ग्रहण करने से मंत्र में दिव्यशक्ति आती है।

अधिकारी शिष्य को अवश्य सद्गुरु मिलते हैं।

अनजाने में भी भगवान् का नाम लेने से कल्याण होता है।

अनासक्ति को दृढ़ करना चाहिए।

अनीति से कमाया हुआ धन कमाने वाले को तो दुःख देता ही है, उत्तराधिकारियों को भी दुःख देता है।

अनेक जन्मों की भोग-वासनाएँ मन में वास करती हैं। उनका जल्दी त्याग नहीं किया जा सकता, किन्तु यदि ज्ञानपूर्वक भोग भोगे जाएँ, तो अन्तकाल तक इन्द्रियाँ ठीक रहती हैं।

अनेक बार जन्म-मरण का कष्ट भोगता हुआ प्राणी मनुष्य शरीर प्राप्त करता है।

अनेक बार मनुष्य को यह प्रतीति होती है कि मैं पाप कर रहा हूँ, किन्तु वह उस पाप को छोड़ नहीं सकता। पाप की आदत खराब है। पाप को मन में घर करने ही मत दो।

अन्त समय भय लगता है। किये हुए पाप याद आते हैं।

अन्न का कभी अनादार मत करो। भिखारी को भी जूठा भोजन मत दो।

अन्न की निन्दा करना पाप है।

अन्नदान और वस्त्रदान उत्तम हैं, किन्तु कथादान सर्वोत्तम है। बिना किसी आशा के जो कथा करता है, वह उत्तम भक्त है।

अन्नाहार करने से रजोगुण बढ़ता है। फलाहार करने से देह में सत्त्वगुण की वृद्धि होती है।

अन्य धर्मों के प्रति दुर्भाव न रखो।

अपना उद्धार तुम स्वयं ही करो। तुम स्वयं अपने गुरु बनो। आत्मा ही आत्मा का गुरु है।

अपना घर तुम अयोध्या जैसा बनाओ। भक्ति के किनारे रहोगे तो तुम्हारा शरीर अयोध्या बन जायेगा।

अपना सर्वस्व भगवान् को अर्पण कर दो।

अपना मन और बुद्धि भगवान् को अर्पण करो।

अपने इष्टदेव में एकान्त निष्ठा रखो एवं दूसरे देवों को अपने इष्टदेव का अंश मानकर उनकी वन्दना करो।

अपने पास खूब हो किन्तु दूसरों को कुछ दे नहीं, वह धेनुकासुर (गधा) है। जो देह को ही सर्वस्व समझे, वह धेनुकासुर है।

अपने पुण्य भूल जाओ। किन्तु किये हुए पापों को याद रखो।

अपने मन से पूछो कि ईश्वर ने मुझे जो सुख-सम्पत्ति दी है, मैं उसके लायक हूँ या नहीं ?

अपमान का दुःख मनुष्य को तब लगता है, जब वह अभिमानावस्था में होता है।

अपात्र के पास ज्ञान नहीं रहता। बिना ज्ञान के सुपात्र शोभा नहीं पाता। पात्र के पास ही धन और ज्ञान शोभा पाते हैं।

अभिमान मनुष्य के पतन का कारण है।

अरुन्धती तारा न दिखाई दे तो एक साल में मृत्यु होती है। स्वप्न में शरीर कीचड़ में धँसता दिखे तो नौ मास में मृत्यु समझना। कान में अँगुली रखने के वाद अन्तर्ध्वनि न सुनाई दे तो आठ दिनों में मृत्यु होती है।

अलक्ष्मी : पाप का पैसा अलक्ष्मी का रूप है। इसका उपयोग भोग-विलास में होता है। मनुष्य को वह रुलाता है और किसी को भी शान्ति प्रदान नहीं करता।

अशान्ति का कारण, जीव का ईश्वर को भूल जाना है।

असंतोषी ही गरीब है।

असत्यभाषी का पुण्य नष्ट हो जाता है।

अहम्भाव (अहं-बुद्धि) जो रखे, वह मूर्ख है।

⁑ आ ⁑

आँख और कान-दोनों को पवित्र रखो।

आँख, कान एवं मुख में भगवान् को रखो।

आँख को मन से शक्ति मिलती है। मन को बुद्धि से एवं बुद्धि को परमात्मा से बल मिलता है।

आचार-विचार शुद्ध हों तो कलिकाल का दुष्प्रभाव नहीं होता।

आजकल के पढ़ाने वाले शिक्षक विलासी होते हैं। इसलिये पढ़ने वाले विद्यार्थी भी विलासी होते हैं। विद्यार्थी-अवस्था में संयम की बहुत आवश्यकता है।

आजकल फैशन-व्यसन में समय और सम्पत्ति बर्बाद हो रहे हैं। व्यसन में उलझा मनुष्य भगवान् की सेवा नहीं कर सकता। जिसे ईश्वर-भजन करना है, वह फैशन और व्यसनों में न फँसे।

आत्मदोष-दर्शन बिना, ईश्वर-दर्शन नहीं होता। पर-दोष-दर्शन परमात्मा के दर्शन में विघ्नकारक है।

आत्मस्वरूप की प्रतीति और देह का विस्मरण होने लग जाए तो जीवित अवस्था में ही मनुष्य मुक्त हो जाता है।

आत्मा-परमात्मा का मिलन ही परमानन्द है।

आनन्द अपने भीतर ही निवास करता है किन्तु मनुष्य उसे स्त्री में, घर में तथा बाह्य सुखों में खोज रहा है।

आमन्त्रण देकर किसी का अपमान करने वाला सदा-सर्वदा नरक का भागी होता है।

आय का पाँचवा हिस्सा दान करो। घर में आया हुआ सारा धन शुद्ध नहीं होता।

आवश्यकताएँ घटने से पाप भी घटते हैं।

आहार-विहार से मनुष्य के मन की परीक्षा होती है।

★ इ ★

इक्यावन-बावन का अर्थ है कि अब तुमने वन में प्रवेश किया है। इसलिए वन में जाकर नियमपूर्वक रोज 21000 नामजप करो। जप करे बिना पाप-वासना छूटती नहीं।

इच्छाओं का अन्त नहीं है।

इच्छा भक्ति में विघ्नकारक है।

इन्द्रिय रूपी पुष्प भगवान् को अर्पण करो।

इन्द्रियों के अधीन होने से मनुष्य के जीवन में विकार आता है।

इन्द्रियों के स्पर्श से होने वाले सुखों की अनुभूति खुजली में खुजलाहट के सुख के समान है।

इन्द्रियों को अधीन करने वाला ईश्वर है।

इन्द्रियों को भोग से शान्ति नहीं मिलती। प्रभु-स्मरण एवं प्रभु-सेवा से शान्ति मिलती है।

इन्द्रियों को रोकने-से नहीं, बल्कि प्रभु में लगाने से वासना का नाश होता है।

इन्द्रियों पर विश्वास नहीं करो। मन का विश्वास तो कभी करो ही नहीं।

इन्द्रियों में जो फँसेगा, वह भक्ति नहीं कर सकेगा।

इस शरीर की अन्त में क्या गति होनी है? पशु-पक्षी बन जाये अथवा राख का ढेर बन जाये, यह बात कोई नहीं सोचता। लक्ष्मी के मद में इस शरीर को अजर-अमर मानने लगते हैं और दूसरे प्राणियों से द्रोह करते हैं। यह शरीर तो परमात्मा के काम के लिए है।

इस संसार की बहुत बातें समझने में कोई सार नहीं, उल्टे वे भक्ति में विघ्नकारक हैं।

इस संसार में जब तक मनुष्य किसी जीव का है, तब तक वह भगवान् का नहीं हो सकता।

ई

ईश्वर का चिन्तन न हो तो कोई बात नहीं, किन्तु संसार के चिन्तन में लीन नहीं होना।

ईश्वर की आराधना किये बिना न बुद्धि मिलती है, न शक्ति।

ईश्वर की संतान को गरीब कहोगे तो क्या उसे बुरा नहीं लगेगा? नम्र एवं दीन होकर आँखें नीची करके दान दो।

ईश्वर की सलाह लो। मन की सलाह मत लो। मन दगाबाज है।

ईश्वर के दिये हुऐ समय, संपत्ति और शक्ति का जो सदुपयोग करे वह देवता; जो दुरुपयोग करे वह राक्षस।

ईश्वर के लिए कुछ त्याग करो।

ईश्वर के साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध जोड़ो। बिना सम्बन्ध सामान्य मनुष्य भी बेलाग रहता है।

ईश्वर के सिवाय दूसरों को साथ सम्बन्ध रखोगे तो दुःख पाओगे।

ईश्वर को अर्पण किये बिना जो खाये, वह भूखा रहता है।

ईश्वर को फल अर्पण करोगे तो ईश्वर तुम्हें सब कुंछ देगा। अपने सत्कर्मों का फल जो भगवान् को अर्पण करता है, उसकी टोकरी भगवान् सदा रत्नों से भर दते हैं।

ईश्वर-चिन्तन करते-करते जीव ईश्वरमय बनता है। ध्यानकर्ता जिस स्वरूप का ध्यान करता है, उस रूप (ध्येय) की शक्ति उसमें आती है

ईश्वर जिस स्थिति में रखे, उसी में आनन्द मानो। हर काम ईश्वर की आज्ञा मानकर करो। कर्म करो, किन्तु फल-भोग की इच्छा मत रखो। फल कितना और कब मिलेगा - यह भगवान् के हाथ की बात हैं।

ईश्वर जिसे मान देता है, उसी का मान स्थायी होता है। संगति का असर मन पर होता है। मनुष्य जन्म से बिगड़ा हुआ नहीं होता, वह जैसी संगति में पड़ेगा वैसा ही बनेगा। सत्संग से जीवन सुधरता है, कुसंग से जीवन बिगड़ता है। विलासी की संगति से मनुष्य विलासी बनता है परन्तु विरक्त की संगति से विरक्त। दूसरा कुछ बिगड़े तो बिगड़ने दो, किन्तु मन और बुद्धि को कभी मत बिगड़ने दो।

ईश्वर-दर्शन के बाद भी जप, साधन आदि छोड़ने नहीं चाहिए। साधन छोड़ने वाले को माया कष्ट देती है।

ईश्वर ने जो दिया है, उसी में आनन्द माने वह धनी है। इसके विपरीत सोचने वाला दरिद्र है।

ईश्वर-प्राप्ति के लिये मनुष्य शुद्ध हृदय से साधना नहीं करता। इसी कारण उसे भगवान् दिखाई नहीं देते।

ईश्वर सब जगह है, मनुष्य ऐसा मानने लगे तो पाप करने के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता।

ईश्वर सब में है, ऐसा अनुभव करने की आदत डालो।

ईश्वर-सान्निध्य का मनुष्य सतत अनुभव नहीं करता। इसी कारण उसे भय लगता रहता है।

ईश्वर से अलग होकर बुद्धि विषयों की ओर जाए तो विपत्ति में डालती है।

ईश्वर से कुछ मत माँगों। माँगोगे तो वह व्यापार होगा।

ईश्वर से प्रेम करना हो तो माया से दूर रहो। सुवर्ण और कामिनी माया के रूप हैं। इन दो वस्तुओं में मन न जाये, ऐसा निश्चय करो। शरीर से पाप करोगे तो सजा होगी। मन से पाप करोगे तो भी सजा होगी।

★ उ ★

उठते समय भगवान् का स्मरण-प्रार्थना कर दर्शन करो। पृथ्वी की भी वन्दना करो।

उत्तम से उत्तम वस्तु भगवान् को अर्पण करना, भक्ति है।

उत्सव के दिन शक्ति, मन, वाणी का सदुपयोग करो। भगवान् का खूब स्मरण करो। गरीबों को अन्नदान करो। साधु–महात्माओं को भोजन कराओ।

उपदेश लेने के लिए दीन बनो।

उम्र के पचासवें वर्ष से उत्तरार्द्ध–उत्तरावस्था में जरासंध याने बुढ़ापे के साथ युद्ध शुरू होता है। संधियाँ (जोड़) दुखने लगें तो समझना कि जरासंध (बुढ़ापा) आ गया है।

★ ए ★

एक ईश्वर निर्दोष है। सम्भव है, गुरु में कोई दोष रह जाए। किन्तु गुरु का दोष अनुकरणीय नहीं है।

एक क्षण भी जो भगवान् से अलग न होवे, वह भक्त।

एक वर्ष तक वाणी से जप करो, तीन वर्ष तक कण्ठ से एवं तीन वर्ष के बाद मन से जप होता है। उसके बाद 'अजपा' स्थिति आ जाती है।

एकाग्रचित्त होकर कथा सुनो। कथा–श्रवण के क्षणों में संसार को भूल जाओ।

एकादशी के दिन अन्न की रसोई मत बनाओ।

एकादशी को अन्न न खाएँ।

ऐसा कीर्त्तन करो कि भगवान् स्वयं आकर तुम्हारा द्वार खटखटावें।

ऐसा सादा जीवन बिताओ कि मन में कोई सुख भोगने की वासना जाग्रत ही न हो।

ऐसे वचन बोलो कि सबका कल्याण हो।

★⁑ क ⁑★

कंचन एवं कामिनी में जो फँसा है, उसे माया में उलझा हुआ समझना।

कठोर वचन कभी मत बोलो।

कठोर वाणी से जो पति का अपमान करे, वह कौवी है।

कथा तुम्हें अपने दोषों का ज्ञान कराती है। कथा सुनने के बाद रोना आए तो मानना कि तुमने कथा सुनी है।

कथा सुनने तथा सन्तों की सेवा करने से जीवन सफल होता है।

कथा सुनो, मनन करो एवं उसे जीवन में उतारो।

कथा से यदि कोई सीख एवं नियम न लो तो कथा सुनना व्यर्थ है। कथा कान से सुनो और हृदय में रखो।

कन्या के माता-पिता का गुणगान करोगे तो कन्या खुश होगी। तुम प्रेम करोगे तो लोग भी तुम्हारे साथ प्रेम करेंगे।

कपट मत करो, किन्तु अधिक सरल भी मत बनो।

कम खाने वाले का शरीर स्वस्थ रहता है। गम खाने वाले का मन स्वस्थ रहता है।

कम बोलो, अधिक बोलकर शक्ति का अपव्यय न करो।

कर्म करो, किन्तु कर्म-फल भोगने की इच्छा मत करो।

कर्म तब तक करो जब तक शरीर खूब थक न जाए। शरीर को विशेष थकावट न मालूम हो तो बिस्तर पर सोने से नींद नहीं आती और पाप करने की इच्छा होती है। सत्कार्य करते हुए गहरी थकावट आएगी तो नींद अच्छी आएगी और निद्रा भी भक्ति बन जाएगी।

कान के बाल सफेद हो जाएँ तो मानना कि अतिवृद्धावस्था आ गई है।

काम को एक स्त्री में सीमित करके काम-नाश करने के हेतु विवाह किया जाता है।

काम–क्रीड़ा करने वाले की बुद्धि जड़ हो जाती है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य और अविद्या की सात ग्रन्थियों से जीव बंधा हुआ है, इन गाँठों से जीव को मुक्त होना है।

काम–दोष क्रिया (कार्य) के परिणाम को अशुभ बनाता है।

काम–सुख का चिंतन विषय–भोग से भी खराब है।

कामसुख भोगने के बाद अति कामी का भी स्त्री से मन हट जाता है। भले ही कामेच्छा पुनः जाग्रत होवे किन्तु उस समय तो घृणा होती है। यह घृणा कायम रहे तो बेड़ा पार है। वैराग्य आता तो है, किन्तु टिकता नहीं।

कामी और विलासी पुरुषों के बीच में रहकर ब्रह्मज्ञानी होना कठिन है। सत्संग न मिले तो कोई बात नहीं। किन्तु कामी पुरुष का संग मत करो।

कामी के हाथ में वेद–मंत्र जाएँ तो वह उनका मनमाना अर्थ करता है। वेद का वह उल्टा अर्थ करता है।

कामी व्यक्ति के स्मरण से स्वयं का मन भी कामग्रस्त हो जाता है।

काल (मृत्यु) अवश्यम्भावी है, उसे याद रखो।

काल आता है तो पहले पैरों को पकड़ता है। पाँवों की गति क्षीण होने लगे तो समझना कि काल निकट आ रहा है। अतः इस स्थिति में सावधान हो जाना कि अब काल समीप है। किन्तु काल के काल श्रीकृष्ण के दर्शन हों तो काल का भी नाश होता है।

काल आने से पहले कोई कारण खोजता है, किन्तु काल का सन्देश पढ़ना किसी को नहीं भाता। ऊपर का छप्पर (बाल) सफेद होने लगे तो समझना कि काल आने वाला है। दाँत गिरने लगें तो समझना कि काल की सूचना आ गई है।

काल के साथ बुढ़ापा तुम्हारे शरीर पर चढ़ाई करेगा तो तुम्हें भी यह शरीर छोड़ना पड़ेगा। उसके पहले ही ब्रह्मविद्या का आश्रय लो।

काल धक्का दे और रोते हुए घर छोड़ो, इसके बजाय सावधान होकर समझदारी से घर छोड़ना उत्तम है।

कितनी ही बार देखने में आता है कि पापी सुख भोग रहा है। यह उसके पूर्व-जन्मों के कुछ पुण्य के कारण है - ऐसा मानना। लेकिन पाप का परिणाम दुःख ही है। कोई पुण्यवान आदमी दुःख भोग रहा हो तो समझना कि उसे पूर्व-जन्म का कोई पाप भोगना पड़ रहा है।

किये हुए कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है।

किये हुए पापों के लिए यदि हृदय से पश्चात्ताप न किया जाय तो भगवान् दर्शन नहीं देते।

किये हुए पुण्य और सत्कर्म की किसी से चर्चा न करो।

किसी का अपमान मत करो।

किसी का चेहरा मत देखो। चमड़ी का चिन्तन पाप है। आकार देखने से मन में विकार उत्पन्न होते हैं। सत्कर्म करो। जागृत रहने की जरूरत है। संसार सुन्दर नहीं, ईश्वर सुन्दर है।

किसी का दोष मत देखो। किसी के पापों का विचार न करो एवं जबान पर भी न लाओ।

किसी की मृत्यु के लिये रोओ मत। स्वयं के लिए ही विलाप करो।

किसी के कहने से प्राणी भक्ति नहीं करता। भगवान् कृपा करें तभी भक्ति का रंग चढ़ता है।

किसी के गुरु बनने की इच्छा मत रखो। गुरु बनना हो तो मन के गुरु बनो।

किसी के प्रति दुर्भाव रखोगे तो वह भी तुम्हारे प्रति दुर्भाव रखेगा। जीवों के साथ तो क्या, जड़ पदार्थों के साथ भी दुर्भाव नहीं रखो।

किसी को भी भेद-दृष्टि से मत देखो, भगवद्-दृष्टि से देखो। दृष्टि सुधरेगी तो सृष्टि सुधर जायेगी। भगवान् दृष्टि देता है।

किसी जीव का तिरस्कार मत करो। उसके पापों का तिरस्कार करो।

किसी दिन पाप हो जाये और सेवा करो तो उस दिन प्रभु नाराज हुए से दिखाई देंगे।

किसी भी उपाय से सांसारिक विषयों से मन को हटाकर भगवान् में लगाओ।

किसी भी सुख की आशा मत रखो।

किसी महापुरुष का हाथ सिर पर आने से मानसिक विकार शान्त होते हैं।

किसी महापुरुष की बिना प्रत्यक्ष सेवा किये मानसिक विकार एवं वासनाओं का नाश नहीं होता।

किसी, वस्तु में तिरस्कार-भाव मत रखो। प्रत्येक वस्तु में भगवद्-भाव रख कर निर्विकार रूप से वंदन करना श्रेष्ठ है।

कीर्तन करने से मन का मैल धुलता है।

कीर्तन के समय संसार की सुध-बुध न रहे तो विशेष आनन्द आता है।

कीर्तन बिना कथा पूरी नहीं होती। कीर्तन से पाप घटते हैं, हृदय शुद्ध होता है, भगवान् हृदय में आते हैं।

कीर्तन में ताल की अपेक्षा प्रेम की कीमत ज्यादा है।

कुंभक प्राणायाम को बढ़ाओ। प्राण को शरीर में टिकाये रखोगे तो वासना का नाश होगा। मुझे ईश्वर से मिलना है, यह अलौकिक अभिलाषा करो।

कुसंगति से गृहस्थाश्रम बिगड़ता है।

केवल भोग-विलास में यदि संपत्ति और समय का व्यय करे तो वृक्ष का अवतार मिलता है। पापी को भी वृक्षावतार मिलता है। यह भोग-योनि है।

कोई दुःखी हो, ऐसा काम मत करो।

कोई भी क्रिया शब्दोच्चारण के बिना नहीं होती। यदि जीभ से नहीं तो मन से उच्चारण होता है। पाप करने से दो मिनट पूर्व उस पाप का जीभ अथवा मन से उच्चारण होता है। उसी क्षण उस विचार को नष्ट कर दो।

कोई भी सत्कार्य बारह वर्ष तक नियमित रूप से किया जाये तो उसका सुफल अवश्य मिलता है।

कोई महापुरुष, संतपुरुष कृपा करे तभी पाप-वासना दूर होती है।

कोई मित्र बोले तों उससे अपने सुख-आनन्द की बात मत करो। किन्तु मित्र के सुख-दुःख की बात जरूर पूछो। उसे दिलासा दो।

कोई सन्त जप एवं ध्यान में लीन हो तो वहाँ मत जाओ। जाओ तो नमस्कार करके चले आओ, उसके साथ सांसारिक बातें न करो।

क्रिया करो, किन्तु ईश्वर से दूर मत जाओ। कभी कर्म-विहीन न रहो। प्रवृत्ति का त्याग मत करो। प्रत्येक कार्य को भक्तिमय बनाओ।

क्रियात्मक ज्ञान ही शान्ति देता है।

क्रोध जाने से लोभ तो जाता है, किन्तु काम नहीं जाता। काम को जीतना हो तो केवल दूध-भात पर रहो। रात में गोपालजी की पूजा करो और रासलीला का पाठ करो। रात्रि में बारह बजे श्रीकृष्ण का स्मरण करो। उनके स्मरण से काम नष्ट होगा।

** ग **

गजेन्द्र की भाँति आर्त होकर 'गजेन्द्र-मोक्ष' का पाठ करोगे तो अंतकाल सुधरेगा। इस स्तुति के नित्य पठन से अन्त में भगवान् लेने आते हैं। संकट से मुक्ति होती है और दुःस्वप्न नहीं आते।

गया-श्राद्ध करने वाले के पितरों को मुक्ति मिलती है।

गरीब का सम्मान हो तो भगवान् खूब प्रसन्न होते हैं। वह जिन्हें धन देते हैं, उनसे आशा करते हैं कि वह मेरे अन्य बालकों को भी सुखी करेगा।

गरीब होना गुनाह नहीं है। गरीबी में भगवान् को भूल जाना गुनाह है।

गर्भवास नरक-वास के तुल्य है।

गाय की सेवा तन-मन से करनी चाहिए।

गायों के बीच श्रीकृष्ण भगवान् खड़े हैं, ऐसे गोपाल का ध्यान करो।

गिरते समय, ठोकर लगने पर, दुख होने पर, छींक आने पर तथा विवशता में मनुष्य ऊँचे स्वर से **'श्रीहरये नमः'** बोले तो उसके सब पापों का नाश होता है - वह सब पापों से मुक्त होता है।

गिरने से कोई नुकसान हो जाये तो हाय-हाय मत करो, हरि-हरि कहो।

गुणगान सुनकर फूलो मत और निंदा सुनकर नाराज़ मत होओ। निंदा सहन न कर सको तो कच्चे हो। निंदा करने वाला बड़ा मित्र है।

गुणों से संपन्न पुरुष ही धनवान् है।

गुरु बिना भगवद्दर्शन नहीं होते। किसी को संत की शरण लेनी चाहिए, किसी को गुरु की शरण।

गृह-कार्य के बाद भगवान् का जप नहीं, अपितु प्रभुनाम जपने-के बाद गृह-कार्य करो।

गृहस्थ को विशेष कठोर और विशेष नरम नहीं होना चाहिए। स्त्री के अधीन रहना महापाप है। ऐसे आदमी का दर्शन भी पाप है। स्त्री पर विशेष विश्वास मत रखो। स्त्री की अधिक बातें न मानो।

गृहस्थ पुरुष को घर पवित्र रखना चाहिए।

गृहस्थाश्रम भक्ति में बाधक नहीं, साधक है; किन्तु घर में आसक्ति भक्ति में बाधक है।

गृहस्थाश्रम में दान की विशेष आज्ञा है। दान से धन शुद्ध होता है। वर्ष में एक मास गंगा-किनारे जाकर एकांतवास करके नारायण की उपासना करो। तीर्थ में लौकिक बातें मत करो।

गोमूत्र में पवित्रता है। गोमूत्र का पान एवं उससे स्नान करने से शरीर नीरोग होता है। गोमूत्र पीने से मन भी शुद्ध होता है। गोमूत्र 108 बार पी जाओ, मन शुद्ध होगा, पाप दूर होंगे। यह प्रयोग 6 महिने करो।

ग्राहक में ईश्वर है, व्यापारी ऐसा समझे तो व्यापार बहुत फले-फूले। मैं जो बोलता हूँ वह भगवान् सुन रहे हैं-यह भी एक तरह की भक्ति है।

घ

घर का काम करते समय कोई याद नहीं आता। पर जब माला हाथ में ली तो सगे-सम्बन्धी याद आने लगते हैं। मनुष्य प्रभु-स्मरण करने

बैठता है तो उसे भोगे हुए विषय-सुखों का स्मरण होने लगता है। अतएव भगवान् का विस्मरण हो जाता है।

घर का नाम ठाकुरजी के नाम पर रखो।

घर के मनुष्य ज्यादा वन्दन-सेवा करें तो समझना कि गड्ढे में उतारने की तैयारी है।

घर छोड़ने की जरूरत नहीं है। किन्तु घर में सावधान होकर रहने की जरूरत है।

घर में चाहे जिसे रखो, पर मन में न रखो।

घर में रहना पाप नहीं है, किन्तु उसके भीतर अति आसक्ति पाप है।

घर में लक्ष्मी को माता की तरह रखोगे तो तुम सुख पाओगे। उसके स्वामी बनना चाहोगे तो वह तुम्हें लात मारेगी।

घर से बाहर निकलो तो भगवान् का वन्दन करके निकलो।

* च *

चार प्रसंगों में असत्य बोलना क्षम्य है : (1) विवाह प्रसंग में, (2) स्त्रियों से परिहास के प्रसंग में, (3) प्राण-संकट में और (4) गो-ब्राह्मण की रक्षा के लिये।

चार वस्तुओं में भगवान् ने माया समाविष्ट की है:-

(1) भोजन में मन फँसा रहता है।

(2) द्रव्य में मन फँसा रहता है।

(3) वस्त्र में मन फँसा रहता।

(4) घर में मन फँसा रहता है।

चित्तशुद्धि के बिना ज्ञान टिकता नहीं।

चित्त-शुद्धि हुए बिना भक्ति का उदय नहीं होता।

चित्र के बजाय मूर्त्ति उत्तम है। सेवा में प्रथम ध्यान करो। संपत्ति के अनुसार खर्च करो। सुन्दर सिंहासन बनवाओ। सेवा में बोलना नहीं। देह की प्रतीति हो तो नमस्कार करना। सेवा में दास्यभाव रखो।

चिन्तन करना हो तो कृष्ण-लीला का चिन्तन करो। आँखें खुली हों और समाधि लगी हो तो समाधि सच्ची मानना।

चोरी और व्यभिचार महापाप हैं। सगा भाई भी ये पाप करे तो उसका भी साथ छोड़ देना चाहिए।

चौबीस घण्टे ईश्वर का स्मरण ही भक्ति है।

ज

जगत् की खुशामद करोगे तो वह तुम्हें क्या देगा? इसलिए खुशामद करनी हो तो भगवान् की करो।

जगत् की प्रत्येक वस्तु के साथ प्रेम करना ही भक्तिमार्ग है।

जगत् की बातें करने के लिए मन्दिर नहीं बनाये गये हैं, मन्दिर ध्यान एवं उपासना करने के स्थल हैं।

जगत् के किसी भी जीव से मिलने की आशा न रखो।

जगत् को प्रसन्न करना बहुत कठिन है। भगवान् को प्रसन्न करना कठिन नहीं है।

जगत् को मिथ्या मानने से वैराग्य आता है। संसार को सच मानने से मोह बढ़ता है।

जगत् में किसी को रुलाना नहीं, खुद ही रुदन कर लेना। रुदन से पाप नष्ट होते हैं।

जड़ वस्तु में पहले सुख नजर आता है, पर परिणाम में वह विष जैसा है। सुख से इन्द्रियाँ तृप्त नहीं होतीं।

जन्म जन्मातर के संचित संस्कारों से पाप करने की प्रेरणा मिलती है।

जप एवं ध्यान साथ-साथ होना चाहिए। जप करने बैठो तो जिस देव का जप करो, उसका स्वरूप भी ध्यान में रहना चाहिए।

जप और नाम मन को सुधारते हैं।

जप करने से जन्म-कुंडली के ग्रह भी बदल जाते हैं।

जप की धारा न टूटे-इस बात का बराबर ध्यान रखो।

जप से पूर्वजन्म के पाप नष्ट होते हैं। जप का फल तत्काल न मिले तो समझना कि पूर्वजन्म के पाप अभी शेष हैं। उनका नाश हो रहा है।

जप से मन का मैलापन और चंचलता दूर होती है। परमात्मा के किसी नाम का दृढ़ आश्रय लो। ध्यान के साथ जप करने से बिगड़ा हुआ मन सुधरता है।

जब जीव ईश्वर के साथ प्रेम करे, तब ईश्वर अपना असली रूप बताता है। बिना प्रेम ईश्वर किस तरह अपना असली रूप बताएंगे?

जब तक पाप नष्ट नहीं होते, और जीव शुद्ध नही होता, तब तक प्रभु के दर्शन नहीं होते।

जब तक मन में विकार-वासना है, तब तक मन अशुद्ध रहेगा - ऐसा मानना। जैसे-जैसे वासना घटती जायेगी, वैसे-वैसे मन भी शुद्ध होता जायेगा।

जब तक लौकिक सुख का त्याग न हो, तब तक ईश्वर को जीव पर दया नहीं आती।

जब तक लौकिक सम्बन्धों की स्मृति बनी रहेगी, ईश्वर में आसक्ति नहीं होगी।

जब तक वाणी और व्यवहार में एकता न हो, तब तक वाणी में शक्ति नहीं आती। ज्ञान को क्रियात्मक रूप देने वाला विलासी जीवन बिताते हुए वेदांत की चर्चा करे, यह ठीक नहीं है। अधिक पढ़ने की अपेक्षा पढ़े हुए को जीवन में उतारने की जरूरत है। श्रीकृष्ण ने जो उपदेश दिए हैं, प्रभु ने स्वयं उन्हें अपने जीवन में उतारा है।

जब तक संसार की माया मीठी लगती है, तब तक मनुष्य पर भक्ति का रंग नहीं चढ़ता।

जब प्रेम बढ़ता है तब अनुभव होता है कि ठाकुरजी मेरे हैं। उसके बाद आगे बढ़ने पर ऐसा मालूम होता है कि मैं और मेरे भगवान् एक ही हैं।

जब मन में विषय अथवा पाप प्रविष्ट हों तो कथा के आनन्द एवं नामामृत का आश्रय लो। नामब्रह्म और नादब्रह्म एक हो जायँ तो परब्रह्म प्रकट होगा।

जब विषपान का प्रसंग आवे तो प्रेम से श्रीराम-श्रीराम बोलो। राम-राम बोलने से तालू में से अमृत झरता है। इससे विष-कष्ट नहीं देता।

जब संसार के प्रत्येक विषय में वैराग्य की प्रवृत्ति हो तो जानना कि ईश्वर के प्रति भक्ति का उदय हुआ है।

जब सारे विषय भोगों से निवृत्ति (वैराग्य) हो तो समझना कि प्राणी जाग रहा है।

जल और फल में जिसे संतोष हो, वही सच्चा ब्राह्मण है। ब्राह्मण का जीवन भोग-विलास के लिए नहीं है, तप के लिए है। जिसकी आवश्यकतायें सीमित (कम) हैं, उसके हाथ से पाप नहीं होता।

जवानी में जिसने ज्यादा पाप किये हैं, उसे बुढ़ापे में नींद नहीं आती।

जवानी में जिसे वैराग्य आये एवं संयम धारण करके जो भजन-क्रम बढ़ाये, वृद्धावस्था में उसे भगवान् की प्राप्ति होती है।

जिसका स्वरूप ऊपर से सुन्दर है किन्तु करनी गन्दी है, वह बकासुर है।

जहाँ अज्ञान और दम्भ हो, वहाँ पाप आते हैं।

जहाँ कीर्ति एवं धन का लोभ हो, वहाँ दम्भ आता ही है।

जहाँ प्रेम होता है, वहाँ माँग कर खाने में भी संकोच नहीं होता।

जहाँ बैठे हैं, वहीं भक्ति करना उत्तम है।

जहाँ भक्ति-रहित ज्ञान होता है, वहाँ अधिक बोलने की खराब आदत पड़ जाती है। इससे ज्ञानी में भी वाचालता आती है। भक्ति के साथ ज्ञान आए तो मौन रह कर स्वाध्याय करने की इच्छा होती है।

जहाँ भक्ति हो, वहाँ ज्ञानरूपी सुदर्शन-चक्र रक्षण करता है।

जहाँ लेने की इच्छा हो, वहाँ मोह है। जहाँ देने की इच्छा हो, वहाँ प्रेम है।

जिनकी नजर में रजोगुण होता है, वे जहाँ दोष न भी हो, वहाँ भी दोष ढूँढ लेते हैं।

जिनकी मोक्ष की इच्छा हो, उन्हें कामी स्त्री-पुरुषों का संग सर्वथा छोड़ देना चाहिये। स्त्री अथवा स्त्री का संग करने वाले का भी संग साधक को नहीं करना चाहिये।

जिन हाथों से भगवान् की सेवा एवं परोपकार नहीं होता, वे हाथ मृतक के हाथों के समान हैं।

जिसका जीवन केवल भगवान् के निमित्त है, उसे कभी संग्रह नहीं करना चाहिए।

जिसका जीवन निष्पाप है, उसे शान्ति मिलती हैं

जिसका जीवन शुद्ध है, उसका हिसाब ठीक है।

जिसका पेट भारी हो, वह ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता। ध्यान करने वाले को ब्रह्मचर्य-पालन करना चाहिए। शरीर से ब्रह्मचर्य-पालन बहुत करते हैं, किंतु मन से नहीं। मानसिक ब्रह्मचर्य का भंग शारीरिक ब्रह्मचर्य भंग करने जैसा ही है। एक दिन ब्रह्मचर्य का भंग हो जाये, तो चालीस दिन तक मन स्थिर नहीं होता।

जिसका भोजन अच्छा नहीं होता, उसका भजन भी अच्छा नहीं होता।

जिसका मन पवित्र नहीं है, उसका मन अन्तकाल में बहुत घबराता है।

जिसका मन मैला है, उसे भगवान् का अनुभव नहीं होता।

जिसका सतत चिन्तन रहता है, वे ही भाव मरण-समय में स्मृति-पटल पर उभरते हैं। मरण-समय में वे ही स्मृति में आते हैं।

जिसका सेवन-चिंतन करने से काम का नाश हो, वह ईश्वर है।

जिसका स्वभाव सुन्दर होता है, वह भगवान् को अतिप्रिय होता है।

जिसका हृदय कोमल और सरल हो, लक्ष्मी उसी के पास जाती है।

जिसकी चाह (इच्छाएँ) बहुत कम हैं, वही विशेष उदार बन सकता है।

जिसकी दृष्टि सुधरे, उसकी सृष्टि बदल जाती है।

जिसकी मृत्यु समीप हो उसे घर छोड़ देना चाहिए।

जिसके चरित्र की खबर न हो, उसका स्पर्श मत करो।

जिसके दर्शन से स्वभाव बदल जाये, वह ईश्वर है।

जिसके पास लक्ष्मी हो, उसे चारों ओर नजर रखनी चाहिए और सबका दुःख दूर करना चाहिए।

जिसके मन में काम होता है, उसे सर्वत्र काम दिखाई देता है।

जिसके मस्तक पर नीति का छत्र है, उसे कोई मार नहीं सकता।

जिसके हृदय में तो विष है किन्तु रूप सुन्दर है, वह पूतना है। जिसकी आकृति सुन्दर है किन्तु कर्म खराब हैं, वह पूतना है। जो मिलने पर गुणगान करे और पीछे निन्दा करे, वह पूतना है।

जिस घर में कलह रहे, उस घर में रहने वालों को ज्ञानामृत और भक्तिरूप अमृत नही मिलता।

जिस घर में सुनीति का वास है, वहाँ कलि नहीं आ सकता।

जिस दिन घर में झगड़ा हो जाये, उस दिन घर से बाहर नहीं जाना। घर छोड़ने पर बाहर भी सुख नहीं मिलेगा।

जिस दिन जीवन की समाप्ति, उसी दिन सेवा की समाप्ति। भगवान् से प्रार्थना करो कि जीवन के अन्तिम दिन तक नियमित जप, सेवा, कीर्तन करता रहूँ। उसके बाद काल आए तो आए।

जिस दिन तीर्थ में जाओ, उस दिन वहाँ उपवास करो। ब्राह्मण का अपमान नहीं करना, अपमान करने से तीर्थयात्रा निष्फल होती है। उपवास

करने से शरीर-शुद्धि होती है और पाप नष्ट होते हैं। शरीर में सात्त्विक भाव आते हैं।

जिस दिन पाप-कर्म हो जाये उस दिन उपवास करो। पुनः पाप नहीं होगा।

जिसने काम-वासना पर विजय पा ली है, उसे मृत्यु का भय नहीं रहता।

जिस पर भगवान् को विशेष कृपा करनी होती है, उसे वे अधिक लौकिक सुख नहीं देते। लौकिक सुख में विघ्न आये तो समझना कि भगवान् कोई अलौकिक सुख देने वाले हैं। इसीलिए विघ्न आया है। भगवान् की साधारण कृपा जीव को अलौकिक सुख देती हैं।

जिस भाव से प्राणी ईश्वर का स्मरण करता है, उसी भाव से ईश्वर उसे अपनाता है।

जिस भूमि पर जो काम किया जाये, उसका संस्कार (असर) उस भूमि पर आता है।

जिस व्यक्ति का स्पर्श करोगे उसके शरीर के परमाणु, स्पर्श द्वारा तुम्हारे शरीर में प्रविष्ट हो जायेंगे।

जिस स्वरूप का मन बार-बार ध्यान करता है, उसका आकार मन में स्थिर हो जाता है।

जिसे अपने भाई-बहिन में ईश्वर न दिखाई दे, उसे दूसरे में एवं मूर्ति में भी ईश्वर नहीं दिखेगा।

जिसे कहने में लज्जा आये, उसे मन से भी मत सोचो।

जिसे जगत् दिखाई न दे, उसे भगवान् दिखते हैं।

जिसे ज्ञानी, वृद्ध और सन्तों की संगति प्राप्त हो, उसके पतन का भय नहीं रहता। अकेला चले तो पतन का भय है। ईश्वर का हाथ पकड़ कर चलने से गिरने का भय नहीं रहता।

जिसे ब्रह्मचर्य का पालन करना है, उसे लकड़ी की स्त्री का भी स्पर्श नहीं करना चाहिये।

जिसे विशेष यश मिलता है, उसके पुण्य का क्षय होता है। कीर्ति और प्रतिष्ठा में उलझने वाले को अमृत नहीं मिलता।

जीभ का काम है-बोलना और खाना। अतः जीभ पर विशेष संयम रखना चाहिए।

जीभ के अधीन नहीं होना।

जीभ जो माँगे वह उसे न दो। जीभ को वश में रखो।

जीभ मनुष्य को बेहाल (परेशान) करती है। जिसने जीभ को वश में कर लिया है, उसने सब कुछ जीत लिया है।

जीभ सुधरे तो जीवन सुधरे। जीभ बिगड़े तो जीवन बिगड़े।

जीव अभिमानी है। उसके पास कुछ है नहीं, फिर भी अकड़ कर चलता है।

जीव इतना दुष्ट है कि साधारण आनन्द में पागल हो जाता है। थोड़ा दुःख हो तो रोने लगता है।

जीव ईश्वर की शरण में आता है तो भगवान् आलिंगन देते हैं, हृदय से लगाते हैं।

जीव ईश्वर की शरण में जाए, यह जीव का धर्म है। शरणागत को अपनाना ईश्वर का धर्म है।

जीव नारायण का अंश है। उसी में इसे मिल जाना है।

जीव जिस योनि में जन्म लेता है, वह उसे अपने कर्म से प्राप्त होती है।

जीव दुर्बल अवस्था में ईश्वर की शरण जाता है। वह अत्यधिक तड़पता है, व्याकुल होता है, तब परमात्मा को पुकारता है।

जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना जरूरी है। लक्ष्य को ध्यान में रख कर सारे व्यवहार करो।

जीवन-काल में ही यदि मुक्ति न मिले, तो मरने के बाद मुक्ति मिलनी कठिन है।

जीवन कुछ नियमों में बँधा होना चाहिए। जिसके जीवन में कोई नियम नहीं है, वह पशु से भी गया-गुजरा है।

जीवन के अन्तिम श्वास तक जप करते रहो।

जीवन को ऐसा बनाओ कि मृत्यु के समय भगवान् याद रहें।

जीवन में एक ऐसा समय भी आता है जब तुम्हारा भाग्य अनुकूल होता है। तब खूब दो और प्रेम से खर्चो। भाग्य प्रतिकूल होगा तो संपत्ति संग्रह करने का प्रयत्न करने पर भी कुछ नहीं रहेगा।

जीवन में संयम तथा सदाचार न हो तो पुस्तक का ज्ञान कुछ काम नहीं आता।

जीव निरन्तर जिसका ध्यान करता है, उसकी आकृति उसके मुख पर झलकती है।

जीव मर्यादा का उल्लंघन करके दुःख भोगे तो इसमें भगवान् का क्या दोष?

जीव मात्र के सच्चे मित्र भगवान् ही हैं।

जीव मात्र को श्रीकृष्ण बाँसुरी की ध्वनि से बुलाते हैं, किन्तु मोहक विषयों में फँसे जीव को यह ध्वनि सुनाई नहीं देती।

जीव मान का भूखा है। मेरे लिये संसार क्या कहता है - यह जानने की इच्छा मत करो। संसार में कोई अपने लिये अच्छा बोलता है तो सद्भाव जागृत होता है और खराब बोलने वाले के प्रति कुभाव आते हैं। मेरे लिये भगवान् क्या कहते हैं, इस पर रोज विचार करो।

जीव लायक हो जाए; इसीलिये भगवान् दर्शन देते हैं।

जुआ, मदिरापान, स्त्री-संग, हिंसा, असत्य, मद, आसक्ति और निर्दयता में कलि का वास है।

जैसी ध्वनि वैसी प्रतिध्वनि। किसी जीव के प्रति यदि तुम दुर्भाव रखोगे तो वह जीव भी तुम्हारे प्रति वैसा ही भाव रखेगा।

जैसे अन्न का सेवन रोज करते हो, वैसे ही बार-बार सत्संग-सेवन की भी आवश्यकता है।

जो अच्छे संस्कार मन में दृढ़ होते हैं, वे दूसरे जन्म और अन्त समय में काम आते हैं।

जो ईश्वर को अर्पित करता है, ईश्वर उसे अनन्त गुना कर देता है।

जो काम-सुख में लीन हैं, वे योगाभ्यास नहीं कर सकते। भोगी यदि योगी बनने का प्रयत्न करेगा, तो रोगी बन जायेगा।

जो कोई तुम्हारी निन्दा करे, उसे सहन करोगे तो तुम्हारा पाप निन्दक को लगेगा और निन्दक के पुण्य तुम्हें मिलेंगे।

जो जितेन्द्रिय नहीं है, वह जंगल में जाकर भी प्रमाद करता है।

जो दान लेता है, वह बन्धन में पड़ता है।

जो नाम का आश्रय रखता है, उसे जरूर प्रभु का साक्षात्कार होता है।

जो पाप कुछ समय के लिये मन में बैठ गया है, उसे फिर रोकना मुश्किल हो जाता है।

जो पापी है, उसे डर लगता है।

जो पिता हो गया है, उसके माथे पर बड़ी जिम्मेवारी है। जो पिता पुत्र को सुसंस्कारी नहीं बनाता, वह पिता पुत्र का शत्रु है।

जो पुस्तकों के पीछे पड़े, वह पंडित। जो भक्ति-भाव से प्रभु के पीछे पड़े, वह सन्त।

जो बाहर से सुन्दर दिखता है, वह भीतर से भी सुन्दर है – ऐसा विश्वास मत करो।

जो बुद्धि काम-सुख का विचार करती है, वह जड़ बनती है।

जो भगवान् के नाम को जपता है, भगवान् हर समय उसके साथ रहते हैं।

जो भगवान् को प्रिय है, वही कार्य करो।

जो मन में हो वही बोलो। वाणी और क्रिया से एक बनो।

जो मित्र नहीं हैं, वह शत्रु नहीं बनता। किन्तु जो मित्र है, वही एक दिन शत्रु भी बन जाता है।

जो विद्या अन्त काल में काम नहीं आती, वह किस काम की?

जो व्यक्ति अनुपस्थित है, उसके दोषों की चर्चा करना निन्दा है।

जो शुक्र (वीर्य) की सेवा करता है, वह ब्रह्मचर्य पालन से बलवान बनेगा।

जो सदाचारी एवं पवित्र जीवन बिताता है। उसके यहाँ भगवान भिक्षा माँगने आते हैं। भगवान् तीन वस्तुएँ माँगते हैं-तन, मन और धन। ये तीनों समर्पित करे तभी रासलीला में स्थान मिलेगा, जीव-ब्रह्म का मिलन होगा। बलि के समान जो अर्पण करेगा, भगवान् उसी के द्वारपाल बनेंगे।

जो सदैव सावधान रहे, वह सन्त है।

जो सब प्रकार से सुखी हो गया है, वह दीनभाव से प्रभु के आगे नमता नहीं है।

ज्ञान का अनुभव भक्ति और वैराग्य बिना नहीं होता।

ज्ञान की बातें करने की नहीं हैं। ज्ञान का तो अनुभव किया जाता है। ज्ञानी पुरुष में किसी समय भी ज्ञान का अभिमान नहीं रहता।

ज्ञान के समान दूसरी कोई पवित्र वस्तु नहीं है।

ज्ञान तथा वैराग्य-विहीन भक्ति, बोझिल है।

ज्ञान दूसरों को उपदेश देने के लिए नहीं हैं। वह ईश्वर की आराधना करने के लिए है।

ज्ञान भोग के लिए नहीं, भगवान् के लिए है।

ज्ञानमार्ग में काम विघ्नकारक है। काम से कर्म का नाश होता है।

ज्ञानमार्ग में क्रोध विघ्नकारक है। क्रोध से ज्ञान का नाश होता है।

ज्ञान-मार्ग में अनेक विघ्न आते हैं। ग्यारह इन्द्रियाँ जब एकाग्र होकर ध्यानस्थ हों तो साक्षात्कार होता है।

ज्ञानमार्ग में अभिमान विघ्नकारक है।

ज्ञान-वैराग्य के साथ भक्ति फले-फूले तो ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

ज्ञानी एवं योगियों को भी कर्म-क्षय करने के लिए तीन जन्म तो लेने ही पड़ते हैं।

ज्ञानी पुरुष का पतन काम से नहीं, क्रोध से होता है।

ज्ञानी पुरुष को किसी वस्तु से स्नेह नहीं करना चाहिए, न किसी वस्तु का संग्रह करना चाहिए।

ज्ञानी मृत्यु टालने का प्रयत्न नहीं करते, मृत्यु सुधारने का प्रयत्न करते हैं।

ज्यादा जीने की और जल्दी मरने की इच्छा मत रखो।

*** झ ***

झूठ बोलने पर उपवास करो। पाप हो जाये,उस दिन माला जपो, फेरो।

*** ठ ***

ठाकुरजी का अनुभव पहले स्वप्न में होता है।

ठाकुरजी को सदैव साथ रखोगे तो जहाँ भी जाओगे भक्ति कर सकोगे।

*** त ***

तन और मन का स्वामी भगवान् है – यह याद रखना।

तन, वाणी तथा मन से किसी को दुःखी न करना यज्ञ है। अकारण आत्मिक पीड़ा देना अपराध करना है। सदा प्रसन्न रहना भी यज्ञ है।

तप का प्रथम अंग जीभ पर नियन्त्रण करना है।

तप न करने वाले का पतन होता है।

तपश्चर्या के बिना जीवन में सुवास (सुगन्ध) नहीं आती।

तप से पाप नष्ट होते हैं, और जीवन शुद्ध होता है। गृहस्थ का धर्म है कि साल में ग्यारह महिने घर में रहे और एक मास किसी पवित्र तीर्थ में एकान्त में बैठकर तप करे। उस समय में कोई प्रवृत्ति नहीं रहनी चाहिए। जो काम करो, वह प्रभु के लिए करो।

ताली बजाना नादब्रह्म है। नादब्रह्म और नामब्रह्म एक हो जाए तब परब्रह्म प्रकट होता है।

तीर्थ में जाना अच्छी बात है। किन्तु शरीर तीर्थ के समान पवित्र नहीं है।

तुम्हारी कोई निन्दा करे तो उसे शान्तिपूर्वक सहन करो।

तुम्हारी संगति में आनेवाला व्यक्ति यदि भक्ति के रंग में न रँगे, तो समझना कि तुम्हारी भक्ति कच्ची है।

तुम्हारे घर ब्रह्मचारी आए तो उसका सम्मान करो।

तुम्हारे जीवन में श्रीकृष्ण गौण और कामसुख प्रधान बने तो समझना कि तुम्हारी गाड़ी गलत रास्ते पर जा रही है।

तुम्हारे दुःखों का कारण तुम्हारे भीतर है। अज्ञान और अभिमान, ये दुःख के कारण हैं।

तुम्हारे पास पैसा होगा तो सभी सगे-सम्बन्धी सेवा करेंगे।

तुम्हारे मन को तुम्हीं काबू में रख सकते हो।

तुम्हें जो मिला है, वह दूसरों को भी दो।

तुम्हें जो स्वरूप अच्छा लगे, उसका ध्यान करो।

तुलसी और कमल भगवान् को बहुत प्रिय हैं।

तुलसी-वंदन नित्य करने वाले को रोग नहीं होता।

तृप्ति भोग में नहीं, त्याग में है।

तेरह करोड़ जप करने से ईश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन होगा।

त्याग करना भी धर्म है।

त्याग से अलौकिक शक्ति आती है। विषय छूटते हैं तो दुःख होता है, किन्तु समझ-बूझकर विषयों का स्वयं परित्याग करें तो आनन्द की प्राप्ति होती है।

त्याग से शक्ति बढ़ती है। धीरे-धीरे संयम बढ़ाओ।

⁂ थ ⁂

थोड़ा मिलने पर जो अधिक माने, वह ईश्वर। अधिक मिलने पर भी जो थोड़ा माने, वह जीव।

** द **

दया बहुत विवेक से करो। कितने ही दया-कार्य ईश्वर के भजन में विक्षेप कारक हैं।

दर्शन में आनन्द तब आता है, जब चार आँखें मिलती हैं।

दर्शन में आनन्द तब आता है, जब भगवान् दृष्टि देते हैं।

दान-दाता को अभिमान नहीं करना चाहिये। जो वन्दन करता है, वह प्रभु को बन्धन में रखता है।

दास्य-भक्ति से हृदय जल्दी दीन होता है। प्रथम चरणारविन्द का ध्यान करना, बाद में मुखारविन्द का; उसके बाद सर्वांग का ध्यान करना।

दिन में दो-चार बार श्मशान को याद करने से बुद्धि में परिवर्तन आता है।

दीन होने से प्रभु की स्वीकृति में किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता।

दीपक जलाने से तुम्हारे हृदय में प्रकाश होता है। सेवा करने से सेवक को सुख मिलता है।

दुःख ईर्ष्या का कारण होता है।

दुःख में प्रभु का नाम न भूलना।

दुःख में साथ देने वाला ईश्वर होता है। सुख में साथ देने वाला मनुष्य।

दुःखित अवस्था में भगवान् गुप्त रीति से प्राणियों की मदद करता है।

दुनिया स्वार्थी है। जीव इतना दुष्ट है कि खोटा काम करता है, किन्तु इसका उसे दुःख नहीं है। पर दूसरे के किए हुए खोटे काम से उसे दुःख है। वह स्वयं खोटा काम करे और उसे अच्छा माना जाये, ऐसी उसकी इच्छा रहती है।

दूसरे का धन हरण करने वाला धृतराष्ट्र-तुल्य होता है।

दूसरे-जन्म की तैयारी मनुष्य इसी जन्म में करता है।

दूसरे में तुम ईश्वरीय भाव रखोगे तो दूसरे भी तुम्हारे में ईश्वरीय भाव रखेंगे।

दूसरों का अपमान करने वाला स्वयं अपना ही अपमान करता है। दूसरों का उच्छेद करने का अर्थ अपना उच्छेद करना ही है।

दूसरों की निन्दा सुनने से पाप लगता है।

दूसरों की पंचायत में मत पड़ो, अपनी सुधारो।

दूसरों के सुख में सुखी होना ही प्रेम का लक्षण है।

दूसरों के पाप का विचार करना पाप है।

दूसरों के व्यवहार से अपने मन को अशान्त मत होने दो।

दूसरों को ज्ञान दे और स्वयं विपरीत आचरण करे, वह राक्षस है।

दूसरों को रुलाकर सुख भोगने वाला कंस है। आज समाज में कंस बहुत बढ़ गये हैं। जीव हमेशा काम, क्रोध की मार खाता आया है।

दूसरों को सुखी करने के लिए, जो स्वयं दुःख सहन करे, वह शिव है। स्वयं को सुखी रखने के लिए दूसरों को दुःख देने वाला संसारी जीव है।

दूसरों को सुधारने के प्रपंच में मत पड़ो। अपना सुधार करो।

दृढ़ निश्चय से कठिन से कठिन कार्य भी सिद्ध होता है।

दृढ़ निश्चय होगा तो भगवान् जरूर सहायक होंगे।

दृष्टि को ऐसी गुणमयी बनाओ कि दोष किसी में नजर ही न आये।

दृष्टि खराब है तो संसार बिगड़ा हुआ नजर आता है।

देव अथवा राक्षस बनना तुम्हारे हाथ में है।

देव-धन और ब्राह्मण का धन पचाने की इच्छा मत रखो।

देह-दृष्टि रखने की अपेक्षा देव-दृष्टि रखो।

देह में अनेक जन्मों का पुण्य एकत्र हो, तो संतान उदार होती है।

देह में सत्त्वगुण की वृद्धि होने पर स्वयमेव ज्ञान प्रवाहित होने लगता है।

देह-रूपी भवन में भगवान् को स्थापित करने के लिए आँख और कान प्रवेश द्वार के समान हैं।

देहावसान के समय बीस करोड़ बिच्छुओं के काटने के ऐसी पीड़ा होती है।

दो चार रुपयों के लिए मनुष्य कितना पाप करता है। क्षुद्र पाप मनुष्य बार-बार करता है। अनेक क्षुद्र पाप इकट्ठे होने से महापाप हो जाता है। पाप न करना ही महान् पुण्य है।

दो शरीरों के स्पर्श में सुख नहीं मिलता, पर दो प्राण एक हों तो आनन्द आता है। अनेक प्राण जिसमें मिले हैं, उस ईश्वर में मिलने में कितना आनन्द होगा।

द्वादश सूर्य-नमस्कार नित्य करो।

⁂ ध ⁂

धन का संग्रह मत करो – दान करो।

धर्म एवं नीति से वर्जित वस्तु खाने की इच्छा हो एवं जीभ की तृप्ति के लिये भोजन किया जाए, तो समझो कि जीभ में पूतना आ गई है।

धर्म तथा मर्यादा के पालन के बिना भक्ति और ज्ञान निरर्थक हैं।

धर्मी पुरुष दुःख भोगे तो उसके यहाँ सन्त का आगमन होता है।

धीरे-धीरे मृत्यु की तैयारी करो।

धीरे-धीरे स्वभाव को सुधारो। स्वभाव के सुधरने से भक्ति सिद्ध होती है।

ध्यान करते समय मन एकाग्र न हो, तो पुनः पुनः भगवान् के नाम का चिन्तन करो।

ध्यान करने वाले को ध्यान के लिए पवित्र एवं एकान्त स्थान में बैठना चाहिए। एक आसन से बैठो।

ध्यान का उत्तम समय ब्राह्ममुहूर्त (प्रातः 4 से 6।।) है। प्रातःकाल जल्दी उठकर आधा घंटा ध्यान करो। बारह वर्ष नियमपूर्वक ध्यान करने से अनुभव होगा।

ध्यान-बिना ईश्वर की अनुभूति नहीं होती।

ध्यान-बिना ईश्वर-दर्शन नहीं होते।

ध्यान में देह और जगत् की सुध नहीं रहती।

ध्यान में प्रथम शरीर को स्थिर करो। फिर मन और आँखों को।

ध्यान में मन स्थिर न हो तो उसे मृत्यु का भय दिखाओ। इससे मन स्थिर होगा। मन को समझाओ।

ध्यानावस्था में मन शुद्ध न हो तो आनन्द नहीं आता।

** न **

नयनों में स्नेह और हृदय की विशालता भगवान को बहुत प्रिय हैं।

नाम और रूप का मोह न छूटे, तब तक भक्ति नहीं होती।

नामामृत और कथामृत-इन दो प्रकार के अमृत का पान करने से इन्द्रियाँ वश में रहती हैं।

निद्रा देवी कथा-कीर्तन में विघ्न करतीं है।

निद्रा में मन निर्विषय बनता है। अतः नींद में आनन्द का अनुभव होता है।

निन्दा एवं निद्रा पर जो विजय पा लेते हैं, वे ही भक्ति करने में समर्थ होते हैं।

निन्दा करने वाले पर क्रोध मत करो। निन्दा को भी ईश्वर का एक शुभ संकेत समझो।

निन्दा का असर जिस पर बिल्कुल न हो, वह सच्चा भक्त है।

निन्दा नरक के समान है, यही ईश्वर का नियम है। जिस इन्द्रिय से मनुष्य पाप करता है, उस इन्द्रिय को भगवान् सजा देते हैं। उस इन्द्रिय को भगवान् दुःखी करते हैं।

निन्दा पर ध्यान मत दो। द्वेष करने वालों को भी याद मत रखो। पेट में गाँठ मत रखो।

निन्दारूपी विषपान करोगे तो अमृत मिलेगा। प्रतिकूल परिस्थिति ही विष है। यही सुख है। ज्ञानगंगा मस्तक में रखोगे तो विषपान कर सकोगे।

नियमपूर्वक रोज तीन घंटा मेरी सेवा करोगे तो मैं तुम्हें पाप करने से रोकूँगा, ये प्रभु के वचन हैं।

निरन्तर काल का भय मनुष्यों को पाप कर्मों से निवृत्त रखता है।

निरन्तर भजन करने से भक्तों का शरीर दिव्य बनता है।

निर्गुण (ब्रह्म) में निष्ठा नहीं होवे तब तक मन के राग-द्वेष नष्ट नहीं होते।

निर्भयता तभी आती है, जब मनुष्य हमेशा भगवान् के सान्निध्य का अनुभव करता है।

निश्चय करो कि आज से परमात्मा को जो अच्छा लगेगा, वही कार्य करूँगा। प्रातःकाल यही प्रार्थना करो। धरती से सहनशीलता का गुण लो और खूब सहनशील बनो।

नेत्रों द्वारा काम मन में आता है। रावण रूपी काम को आँखों में मत आने दो।

नेत्रों में काम रखकर जगत् को देखोगे तो मोह बढ़ेगा। आँखों में ईश्वर को रखोगे तो मोह का नाश होगा।

⁑ प ⁑

पचास पूरे हो जावें तो समझना कि आधा शरीर काल के मुख में चला गया है।

पढ़ने, लिखने और विचारने की अपेक्षा उपदेश को जीवन-व्यवहार में उतारना श्रेष्ठ है।

पति को परमात्मा के पास और सत्संग में ले जाऐ, वही सच्ची गृहिणी और पत्नी है।

पति को परमात्मा के मार्ग में प्रवृत्त करे, पति के हाथ से सत्कर्म कराये वही सच्ची पत्नी है। पति को केवल भोग-विलास में फँसाये रखे वह पत्नी पति की शत्रु होती है।

पति-पत्नी का संबंध विलास के लिए नहीं है, प्रभु-भजन के लिए है। गाड़ी गलत रास्ते चलेगी तो भगवान् तुम्हारी गाड़ी को उलट देंगे।

पति-पत्नी का स्वभाव जब तक एक न हो तब तक विवाह सफल नहीं होता। शरीर दो पर मन एक, इसी का नाम विवाह है।

पति-पत्नी पवित्र जीवन बितायें तो भगवान् पुत्र रूप में उनके घर आने की इच्छा करते हैं।

पति-पत्नी प्रेम तो करें, किन्तु एक-दूसरे के शरीर में आसक्ति न रखें। आजकल प्रेम शब्द को लोगों ने कलंकित कर दिया है। जहाँ विकार और वासना है, वहाँ प्रेम नहीं है। उसे मोह कहते हैं।

पति-पत्नी संयमी न हों तो उनके पापी सन्तान पैदा होती है, पवित्र दिनों में जैसे कि दोनों पक्षों की दूज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चौदस, पूर्णिमा और अमावस्या तथा, जन्मतिथि, व्यतीपातादि के दिन अवश्य ब्रह्मचर्य का पालन करो।

पति-पत्नी साथ-साथ ईश्वर चिंतन करें तो प्रभु जल्दी प्रसन्न होते हैं।

पति-पत्नी सावधान रहकर पवित्र जीवन बितावें तो संन्यासियों का-सा सुख मिलता है। साधु-सेवा और सत्संग प्राप्त हो, तो गृहस्थाश्रम दिव्य बन जाता है।

पति में ईश्वर का भाव नहीं रहेगा तो मूर्ति में ईश्वर का भाव नहीं आएगा।

पतिव्रता स्त्री ईश्वर को बालक बना सकती है।

पत्नी पुण्यवान हो तो उसका पति कभी दुःख नहीं पाता।

पत्र में जो लिखा जाता है, वह सभी सच्चा नहीं होता। पत्र में स्त्री लिखती है - 'आपको हर घड़ी याद करने वाली', किन्तु हर घड़ी निकटतम व्यक्ति भी याद नहीं रहता। व्यवहार सच्चा नहीं है, अतः पत्र में लिखा सच्चा कैसा हो सकता है?

परदेश जाओ तो ठाकुरजी के लिए कोई उत्तम वस्तु जरूर लाओ। इससे तुम्हारा प्रवास भी भक्ति बन जाएगा।

परमात्मा कृति को देखता है। मनुष्य आकृति देखता है।

परमात्मा के दर्शन, बिना संत-मिलन की आतुरता के नहीं होते।

परमात्मा के ध्यान से मन शुद्ध होता है। रोज ध्यान करो। ध्यान में एकाग्रता न हो तो नाम-स्मरण की जरूरत है।

परमात्मा के साक्षात्कार के लिये संयम की अति आवश्यकता है। विद्यार्थी अति संयम न रखे तो विद्या नहीं मिलती। संयम और वैराग्य को खूब बढ़ाओ। एक बार जिस सुख या विषय को त्याग दिया, उसी को फिर भोगने की इच्छा करना, वमन करके उसे चाटने जैसा है।

परमात्मा को जो प्रसन्न कर सकता है, वही संसार को भी प्रसन्न कर सकता है।

परमात्मा को सदैव अपने पुण्य अर्पण करो।

परमात्मा जिस स्थिति में रखे, उसी में संतोष मान कर ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

परमार्थ सरल है, व्यवहार कठिन है। व्यवहार के समय भगवान् को नहीं भूलना।

पराई स्त्री को काम-भावना से देखने वाले पुरुष का मुख काला होता है।

पवित्र एवं सदाचारी ब्राह्मणों तथा सती स्त्रियों के आधार पर पृथ्वी टिकी है।

पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करो। वैराग्य दृढ़ हो, तो ही संन्यास लो।

पवित्रता रखना सबका धर्म है। मरने के बाद भी मन साथ जाने वाला है।

पवित्र शरीर और पवित्र हृदय मथुरा और गोकुल हैं।

पशु-पक्षियों का अनादर मत करो।

पशु-पक्षी भी सत्संग से सुधरते हैं। कामी पुरुष का संग मत करो।

पहले अपने मन को सुधारो, पीछे दुनिया का सुधारना। तुम्हारे चरित्र से तुम्हारी अन्तरात्मा को संतोष हो तो मानना कि स्वभाव सुधरा है।

पाप करते हुए मन में संकोच हो तो समझना कि ईश्वर की कुछ कृपा हुई है। पाप की माँ है ममता और पिता है लोभ। इनका त्याग करो।

पाप कार्य हो जाये तो पश्चाताप करो। स्व-शरीर को दण्ड दो।

पाप को टालो। पुण्यकार्य को शीघ्र करो।

पाप-पुण्य के समान होने पर मनुष्य-जन्म मिलता है। पाप-पुण्य समान रूप से भोगने पड़ते हैं। कोई दुःख का प्रसंग आए तो मन को समझाना कि किसी पाप का क्षय हो रहा है।

पाप प्रथम दृष्टि में ही आता है, दृष्टि-दोष से मन बिगड़ता है।

पाप-मार्ग से सुवर्ण (सम्पत्ति) घर में आऐ, तो वह कलि का स्वरूप है।

पाप-वासना अज्ञान से जगती है। अज्ञान का आधार (मूल) अहंकार है।

पापी के घर भोजन करने से बुद्धि भ्रष्ट होती है।

पापी मनुष्य भक्ति से जितना पवित्र होता है, उतना शम, दम, तप वगैरह से नहीं होता।

पापी रास्ते चलता हुआ भी पाप करता है। पुण्यशाली रास्ते चलता हुआ भी सत्कर्म करता है। रास्ता चलते किसी को मत देखो।

पुत्र तो केवल अपने कुल को तारता है। पुत्री लायक हो तो पिता और पति दोनों के कुलों को तारती है।

पुत्र सुख थोड़ा देता है, दुःख अधिक देता है।

पुराने संस्कारों को मिटाना कठिन है।

पुरुष एक ही स्त्री में काम-भाव रखे और धर्मानुकूल काम भोगे तो गृहस्थ होते हुए भी ब्रह्मचारी है।

पुष्प में लक्ष्मीजी निवास करती हैं।

पूर्वजन्म का प्रारब्ध भोग कर पूरा करना है। किन्तु नये प्रारब्ध का संचय नहीं होना चाहिए।

पूर्व जन्म के पुण्य का असर रहे तब तक पाप का फल नहीं मिलता।

पूर्वजन्म के बारे में विचार मत करो। प्रत्यक्ष जीवन को सुधारने का प्रयत्न करो।

पूर्व जन्म के संस्कार और वासना के नष्ट होने पर कर्म में आनन्द आता है।

पूर्व प्रारब्ध के अनुसार मनुष्य को संतान और संपत्ति मिलते हैं। अतः मनुष्य इनके लिये हर्ष और शोक न करे।

पृथ्वी-तत्त्व गणेश : गणेश की उपासना विघ्न-नाशक है। जल तत्त्व-शिव। शिव की उपासना करने से धन मिलता है। तेजतत्त्व-माताजी। माताजी की उपासना से धन मिलता है। आकाशतत्त्व विष्णु। विष्णु की उपासना प्रेमवर्द्धक है।

पृथ्वी पर नजर रखते हुए चलो कि कोई जीव न मर जाये।

प्रतिकार की शक्ति होते हुए भी जो सहन करता है, वही धन्य है। निन्दा सहन करोगे तो निश्चित ही आगे बढ़ोगे।

प्रतिक्षण को सुधारोगे तो मरण सुधर जायेगा।

प्रतिष्ठा, पैसा और विद्वत्ता अन्तकाल में बिल्कुल काम नहीं आते।

प्रत्यक्ष देव सूर्य-नारायण की आराधना करो।

प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में भगवान् का स्मरण करो।

प्रत्येक क्षण ईश्वर का चिन्तन करो।

प्रभु-कृपा हो तो सत्कार्य करने की इच्छा होती है।

प्रभु के मंगल रूप का ध्यान और जप करने की आदत डालो।

प्रभु के साथ मैत्री करनी है तो काम-मैत्री छोड़नी पड़ेगी।

प्रभु-नाम जपते-जपते प्रदक्षिणा करो।

प्रभु-भजन करते समय, मन यदि विषयों में न जाये तो समझो कि सुरुचि जाग्रत हो रही है।

प्रभु से कुछ माँगना नहीं। प्रभु के उपकारों को याद रखो। प्रभु को सिर्फ प्रेम-डोर से ही बाँध सकते हो।

प्राणी ईश्वर का साथ रखे तो किसी प्रकार का भय नहीं लगता।

प्रभु-वियोगाग्नि में जब मनुष्य तड़पता है, तब भगवान् मिलते हैं।

प्रवृत्ति अपने को छोड़े, इसके पूर्व समझकर स्वयं ही प्रवृत्तियों को छोड़ दो, यह उत्तम रहेगा।

प्राणी ईश्वर से कुछ भिन्न है, अतएव उसे भय है।

प्राणी का प्रत्येक व्यवहार भक्तिमय होना चाहिए।

प्राणी जो कुछ करे सब ईश्वर के लिए करे तो उसकी सभी क्रियाएँ भक्ति बन जाती हैं।

प्राणी दीन होकर ईश्वर की शरण में जाता है, तो ईश्वर उसको सम्मानित करते हैं।

प्राणी दीन होकर ईश्वर के चरणों में रहे तो उसके मन पर अपमान का असर नहीं होता।

प्राणी दुष्ट है, तो भी भगवान् उसे पैसा देता है। जीव अधम हो तो भी भगवान् आशा करते हैं कि कभी तो वह सुधरेगा।

प्राणियों के ऊपर परमात्मा प्रेम की वर्षा करता है। जीव लायक न हो तो भी परमात्मा उसे पैसा और प्रतिष्ठा देता है। जीव दुष्ट है किन्तु परमात्मा दयालु है। हमारे पापों के परिमांण में भगवान् हमें बहुत कम सजा देता है। फिर भी दुःख की बात है कि ऐसे दयालु परमात्मा से भी जीव प्रेम नहीं करता।

प्रातःकाल ऋषियों का स्मरण करने से उनके गुण अपने में आते हैं।

प्रातःकाल, मध्याह्न एवं रात्रि में सोने से पूर्व मंगलाचरण अवश्य करो।

प्रारब्ध भोगना, किन्तु नया प्रारब्ध न बन जाय, इसका ध्यान रखना।

प्रारम्भ में अन्धकार नजर आता है; किन्तु धैर्य के साथ योग-धारण से मन को वश में करो। बुद्धि द्वारा प्रभु के सर्वांगं की धारणा करो। जैसे-जैसे बुद्धि स्थिर होगी, वैसे-वैसे मन भी स्थिर होगा। धारणा स्थिर होगी तो

ध्यान में प्रभु का मंगलमय स्वरूप दिखाई देगा और भक्ति योग की प्राप्ति होगी।

प्रारम्भ में भोग का त्याग करना पड़ेगा।

प्रारम्भिक अवस्था से ही मंगलाचरण करो। मंगलाचरण बहुत प्रभावकारी है।

प्रेम अन्योन्याश्रित होता है, तुम भगवान् को स्मरण करोगे तो भगवान् तुम्हें सदा याद रखेंगे।

प्रेम एवं वन्दन से वैर-विरोध की शान्ति होती है।

प्रेम करने योग्य एक भगवान् ही तो हैं।

प्रेम करने लायक ईश्वर है। सेवा करते समय हृदय द्रवित हो और आँखों से आँसू निकलें तो समझना कि सेवा की है।

प्रेम करने लायक एक ईश्वर है। सांसारिक पदार्थों से किया गया प्रेम एक दिन रुदन का कारण होता है।

प्रेम कैसे करना, यह जगत् को राम और कृष्ण की भाँति बताओ।

प्रेम गुप्त रहना चाहता है तथापि अनेक बार वह बाहर प्रकट भी हो जाता है।

प्रेम जड़ को चेतन बनाता है।

प्रेम माँगना नहीं, प्रेम दूसरों को देना है। विकार, वासना, स्वार्थ आऐ तो प्रेम खण्डित होता है। दूसरे को सुखी करने की भावना रखने वाला कभी दुःखी नहीं होता।

ब

बचपन से ही जो भगवान् को भजता है, उसे भगवान् मिलते हैं। बुढ़ापे में जो भगवान् को भजता है, उसका आगामी जन्म सुधारता है।

बच्चे को सिनेमा भेजने वाली माता, माता नहीं, बच्चे की शत्रु है।

बड़ा भाई राम बने तो छोटे भाई को भरत-लक्ष्मण जैसा बनना चाहिये।

बड़ों का दिल कभी मत दुखाओ।

बड़ों के प्रति सहनशीलता, छोटों के प्रति दया, समवयस्कों के साथ मित्रता एवं सब जीवों के साथ समान व्यवहार करने से सर्वात्मा श्रीहरि प्रसन्न होते हैं।

बताने के लिए नहीं, भगवान् को खुश करने के लिये सेवा करो।

बत्तीस लाख जप-संख्या पूरी होने पर विधाता का लेख भी पलट जायेगा और पाप का नाश होगा।

बदले में भोग माँगे वह बनिया कहलाता है। बनिया का अर्थ है - जो थोड़ा देकर अधिक की आशा रखे।

बनवास के बिना जीवन में सुवास नहीं आती।

बलवान ही भगवान् के मार्ग पर जा सकता है। किन्तु बलवान कौन है? जो भीतरी शत्रुओं–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि को मार सके वही बलवान है।

बस्ती में रहने से झगड़ा-झंझट होता है। अतः साधु को एकांतवास करना चाहिये।

बहुत सरल रहने वाले को संसार दुर्बल गिनता है।

बातों और विचारों में समय मत खोओ। यदि उन्हीं में समय खोओगे तो व्यवहार में उन्हें ही प्रकट करोगे।

बारम्बार एक ही स्वरूप का चिन्तन करो।

बारम्बार जैसा मनुष्य बोलता है, जैसा सोचता है– वैसा ही बन जाता है।

बारम्बार भगवान् का स्मरण करने से भाव शुद्ध होते हैं।

बारह माला का जप होवे, तब तक ठाकुरजी के सम्मुख थाल रखो। लाला को मनाना पड़ता है।

बालक के समान निर्दोष और निर्विकार बनने का प्रयत्न करो। दोष मनुष्य की आँख से मन में आता है। इस कारण दृष्टि के ऊपर अंकुश रखोगे तो जीवन निर्दोष बनेगा।

बालक निर्दोष होता है। उसे सुसंस्कारी बनाओ।

बालक पाँच वर्ष का हो जाए तो उसे धार्मिक संस्कार सिखाने शुरू करो। एकादशी को उसे अन्न मत दो। जो माँ–बाप बालक को छोटेपन में धर्म और भक्ति की शिक्षा न दें और उत्तम संस्कारों से संस्कृत न करें, वे बालक के शत्रु हैं। बालक के मन में विचार शीघ्र प्रविष्ट होते हैं। बालक का हृदय कोमल होता है। बचपन में उन्हें सुसंस्कारों से युक्त करोगे तो वे यौवन में नहीं बिगड़ेंगे। सुसंस्कार उनका रक्षण करेंगे।

बालक बालकृष्ण का रूप है। उसका कभी अपमान मत करो।

बालक से निर्दोषता की सीख मिलती है।

बाल्यावस्था से ही जिसे भक्ति का रंग लगे तो समझना कि यह उसका अन्तिम जन्म है। प्रत्येक वस्तु में भगवान् की प्रतीति होने लगे तो मानना कि उसका अन्तिम जन्म है।

बाह्य संसार भजन में विघ्न नहीं करता। भीतर का संसार भक्ति में विघ्नकारक है।

बिना आतुरता के भगवान् नहीं मिलते। आरती भी आर्त होकर उतारो।

बिना कारण जो कलह करे, वह रावण। जो अपनी जय–जयकार करावे एवं आत्मप्रंशसा करे, वह रावण। जो अपना गुणगान करे, वह रावण।

बिना परीक्षा के भगवान् नहीं अपनाते।

बिना पूर्ण संयम के ज्ञान–प्राप्ति और ईश्वर–दर्शन नहीं होते।

बिना प्रयोजन किसी की ओर मत देखो।

बिना भक्ति के ज्ञान और वैराग्य नहीं आते।

बिना भावना के भक्ति-मार्ग में सिद्धि नहीं मिलती।

बिना श्रम किये दूसरों का खाने वाला चोर। जिसका है उसको दिये बिना खाये, वह चोर। शक्ति होते हुए भी अतिथि-सत्कार न करे, वह चोर। केवल स्वयं के लिए बनाकर खाये, वह चोर। अग्नि में आहुति दिये बिना खाये, वह चोर।

बिल्कुल परिचय न हो और कोई मस्तक नवावे तो समझना कि यह कोई ईश्वर का अंश है।

बिस्तर में सोने के बाद चार मिनट में नींद आ जाये तब बिस्तर पर लेटो। नींद के न आने पर जीव काम-सुख का चिन्तन करता है।

बीते हुए समय का स्मरण मत करो। भविष्य की चिन्ता छोड़ दो। वर्तमान को सुधारो।

बुढ़ापे के लिए अपने भाग का संग्रह करो। लड़कों से न माँगना पड़ जाये, इसलिये संग्रह करो।

बुढ़ापे में शरीर दुर्बल हो जाता है। शरीर जब तक ठीक है, तभी तक बाजी अपने हाथ में है।

बुद्धि इन्द्रियों के पीछे चले तो वक्री हो जाती है, ईश्वर की तरफ झुके तो सरल बनती है।

बुद्धि का उपयोग केवल अर्थोपार्जन के लिए ही नहीं करो, उसे ईश्वर की उपासना में भी लगाओ।

बुद्धि का बड़े से बड़ा दोष असूया है, मत्सर है। किसी से ईर्ष्या मत करो।

बुद्धि में विकार आये तो समझना कि कुछ अशुभ होने वाला है।

बुराई का बदला जो भलाई से दे - वह संत है।

बैर-विरोध को भूल जाओ।

ब्रह्म का विचार करना ही सत्य है।

ब्रह्मचर्य और राम-नाम की शक्ति हो तो इस संसार सागर से पार लगा जा सकता है।

ब्रह्मचर्य पालना हो तो स्त्री के केश और मुख की तरफ नहीं देखो। स्त्री के मुख और केश में काम बसता है। इन्द्रियाँ इतनी बलवान हैं कि अच्छे-अच्छे विद्वानों को भी विचलित कर देती हैं।

ब्रह्मचारियों को गृहस्थी-रूप संसार में माथापच्ची नहीं करनी चाहिये।

ब्रह्मज्ञान की बातों के साथ पैसा और प्रतिष्ठा की लालसा करे, तो ब्रह्मज्ञान की बातें सच्ची नहीं हैं।

ब्रह्माकार-वृत्ति होती तो है, किन्तु उसका टिके रहना मुश्किल है।

ब्राह्मण के प्रति सद्भाव न हो तो तीर्थयात्रा फलेगी नहीं।

ब्राह्मण को त्रिकाल सन्ध्या करनी चाहिये।

★ भ ★

भक्त का प्रत्येक व्यवहार भक्तिमय बनता है। भक्त जो काम करता है, वह आज्ञा समझकर करता है।

भक्ति इस प्रकार करो कि भगवान् को तुम्हारे बिना चैन न पड़े।

भक्ति के व्यसन रूप होने पर मुक्ति मिलती है।

भक्तिमार्ग में लोभ विघ्नकारक है। लोभ से भक्ति नष्ट होती है।

भक्ति में अधर्म आड़े आए तो भक्ति बिगड़ जाती है।

भक्ति में किसी का तिरस्कार नहीं करना, दम्भ के समान कोई पाप नहीं है। दूसरे पापों का तो प्रायश्चित है, किन्तु दम्भ का नहीं।

भक्ति में भोग बाधक हैं।

भक्तिरहित ज्ञान शुष्क ज्ञान है। वह मरण-समय को बिगाड़ता है।

भक्ति व्यसन बन जाये तो बेड़ा पार हो जाता है।

भगवत्स्मरण और सेवा करते-करते घर में कुछ नुकसान भी हो जाए तो होने दो। तन ठाकुरजी के पास एवं मन रसोई में, यह भी क्या कोई सेवा है?

भगवद्दर्शन पाने के बाद भी जप करना नहीं छोड़े।

भगवान् कसौटी पर कस कर अपनाते हैं।

भगवान् कहते हैं कि मैं जिस पर कृपा करता हूँ उसका धन हर लेता हूँ। कारण, धन की वजह से ही मनुष्य अभिमानी बनता है और मेरा तथा लोगों का अपमान करने लगता है।

भगवान् कहते हैं कि जो मेरे पीछे पड़ता है, मैं भी उसके पींछे पड़ता हूँ। प्रभु के पीछे पड़ोगे तो संसार तुम्हारा पीछे छोड़ेगा।

भगवान् का आश्रय लेने वाला मिष्काम बन जाता है।

भागवान् का आश्रय लेने वाला भय-मुक्त हो जाता है।

भगवान् का ध्यान नहीं होवे तो कोई बात नहीं, किन्तु संसार में भी अधिक ध्यान न दो।

भगवान् का नाम जपते हुए मनुष्य तन्मय हो जाये तो दावाग्नि दूर होती है।

भगवान् का वन्दन केवल शरीर से ही नहीं, मन से भी करो। वन्दन भगवान् को प्रेम-बंधन में बाँधता है।

भगवान् का स्मरण और ध्यान करने से मनुष्य ईश्वरीय शक्ति प्राप्त करने में सफल होता है।

भगवान् का स्मरण करते रहो, उसी की सलाह मानो।

भगवान् की कथा बार-बार सुनोगे तो प्रभु में प्रेम-भाव जागृत होगा।

भगवान् की कृपा रहे तो ही जीव विषयासक्त नहीं होता।

भगवान् की कृपा हो तो ही मनुष्य की पाशविक बुद्धि नष्ट होती है।

भगवान् की मर्यादा का पालन करो।

भगवान की मार में भी करुणा है।

भगवान् की सेवा करने के लिए हमारा साथ हुआ है; पति-पत्नी ऐसा मानकर चलें तो जीवन सुखमय होता है।

भगवान् की सेवा तभी हो सकती है जब संसार के विषयों में प्रीति कम होती है।

भगवान् की स्तुति में कोई भूल हो जाये तो प्रणाम करने से परिपूर्णता आती है।

भगवान् कृपा करके जिसे दृष्टि देता है, उसी को ज्ञान होता है।

भगवान् के ध्यान में तन्मय न हो सकने का कारण संसार है। अतः संसार से विलग होने की चेष्टा रखो।

भगवान् के प्रति प्रेम जागृत करना है तो विषयों की आसक्ति छोड़नी ही पड़ेगी।

भगवान् के भक्त, भगवान से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

भगवान् के भक्तों का भगवान् से भी अधिक मान रखो। पाषाण-मूर्ति में सद्‌भाव रखने पर जब मूर्ति में चैतन्यता प्रकट होती है, तो चेतन में सद्‌भाव रखने से क्या ईश्वर-प्राप्ति नहीं होगी? अवश्य होगी।

भगवान् के लिए रसोई करो। भगवान् को भोग लगा कर जीमो। ऐसा नियम कर लो कि ठाकुरजी को अर्पण किये बिना कुछ नहीं खाओगे।

भगवान् के साथ इन्द्रियों का परिणय कराओ, भोगों के साथ नहीं।

भगवान् को अपना ऋणी बनाओ। उनसे कुछ माँगना नहीं।

भगवान् को तुम्हारी पूर्ण चिन्ता है। मनुष्य व्यर्थ चिन्ता करके हृदय जलाता है कि मेरा क्या होगा? मैं समर्थ हूँ और प्रभु का मुझे पूर्ण समर्थन है – यह मान कर निश्चिंत हो कर भगवान् का चिन्तन करो।

भगवान् को देहार्पण करने से प्राणी का कल्याण होगा।

भगवान् को प्रेम से पुकारो, वे दौड़ते आयेंगे।

भगवान् जिस पर कृपा करते हैं, उसका मन शुद्ध हो जाता है।

भगवान् जिसे अपना कहें, उसका बेड़ा पार है।

भगवान् ने जिसे सम्पत्ति दी है, उसे गाय अवश्य रखनी चाहिये।

भगवान् परीक्षा लेते हैं। पहले वे जहर देते हैं, बाद में अमृत।

भगवान् पहले सर्वस्व लेंगे, फिर अपना सर्वस्व देंगे।

भगवान् बड़ी गलती को भी क्षमा कर देते हैं।

भगवान् में मन लगाये बिना काम-क्रोधादि विकार नष्ट नहीं होते।

भगवान् शंकर की कृपा बिना सिद्धि नहीं मिलती।

भगवान् श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन करने के लिए ही मनुष्य जन्म मिला है।

भगवान् से प्रेम बढ़ाना हो तो भगवान् के अवतारों की कथा सुनो, पढ़ो और समझो।

भगवान् से संपत्ति मिली हो तो नियम लो कि सदा ब्राह्मण को भोजन कराओगे।

भविष्य का विचार करके आय का पाँचवाँ भाग बचाना चाहिये।

भागवत-कथा सुनने से श्रद्धा दृढ़ होती है।

भागवत का आश्रय लेने वाला भय-मुक्त हो जाता है।

भागवत की कथा ज्ञान, भक्ति एवं वैराग्य को बढ़ाती है।

भारत भूमि कर्मभूमि है। यहाँ जैसा करोगे वैसा ही फल पाओगे। दूसरों के लिये तुम जैसा भाव रखोगे, वैसा ही भाव दूसरे तुम्हारे लिये रखेंगे।

भावों की शुद्धि बड़ा तप है। किसी संसारी जीव से विरोध न करो।

भिखारी भीख माँगने नहीं आता। वह उपदेश देने के लिए आता है।

भीतरी शत्रुओं को मारे, वह वीर है।

भीष्म द्वारा की गई स्तुति अनुपम है। वह कंठस्थ करने योग्य है। इसे 'भीष्मस्तवराज' स्तोत्र कहते हैं।

भूख और प्यास को रोग मानो। उन्हें सहन करने की आदत डालो।

भूतकाल का विचार करने वाले पर भूत सवार है, ऐसा मानना।

भूत काल का विचार करने से कोई लाभ नहीं है, वर्तमान को सुधारो।

भोग बढ़ेंगे तो पाप बढ़ेगा। भोग घटेंगे तो पाप घटेगा। आदत और हाजत को बढ़ाना नहीं। इससे ही सुखी होओगे। 'यह चाहिए' का अन्त नहीं है।

भोग बाधक नहीं हैं। भोगासक्ति बाधक है।

भोग भोगने से वासना बढ़ती है। इन्द्रियों का क्षय होता है। विषय-चिन्तन से शक्ति का क्षय होता है। ईश्वर का स्मरण करने से शक्ति मिलती है।

भोग भोगने से वृद्धावस्था जल्दी आती है।

भोग-वृद्धि आयु-नाशक है।

भोग में क्षणिक सुख है। त्याग में स्थायी आनन्द है।

भोग से तृप्ति नहीं होती, त्याग से तृप्ति होती है।

भोगी पुरुष ज्ञानमार्ग एवं भक्तिमार्ग में सफल नहीं होता।

भोगी शरीर योगाभ्यास नहीं कर सकता। योग का प्रथम साधन ब्रह्मचर्य है। उसके पालन के बिना कोई योग सिद्ध करने जायेगा तो वह खड्डे में गिरेगा।

भोगे बिना जिनका नाश नहीं होता वे पुण्य कृष्णार्पण किये जा सकते हैं। किन्तु पाप तो भोगने से ही छूटते हैं।

भोजन करना पाप नहीं है। भोजन के साथ तन्मय होना एवं भोजन के लिए भगवान् को भुला देना पाप है।

भोजन, द्रव्य, काम-सुख, स्थान, संतान एवं पुस्तक आदि में प्राणी उलझा रहता है।

भोजन में विषमता (भेदभाव) मत करो। ऐसा करने वाले को संग्रहणी का रोग होता है।

भोजन शुद्ध और सादा हो तो देह में सद्‌गुण बढ़ते हैं। सद्‌गुणों से सहनशक्ति बढ़ती है और बुद्धि स्थिर होती है।

भोजनादि में भेदभाव नहीं करना।

: म :

मंत्र, मूर्ति, माला कभी नहीं बदलना।

मत्सर मनुष्यों का बड़ा शत्रु है।

मन एवं बुद्धि पर विश्वास मत रखो, ये बार-बार दगा देते हैं। अपने को निर्दोष मानना बड़ा दोष है।

मन के अधीन मत बनो। उस पर विजय प्राप्त करो।

मन के स्वामी चन्द्र एवं बुद्धि के स्वामी सूर्यदेव की आराधना करो। त्रिकाल संध्या करो। बुद्धि शुद्ध होगी।

मन को एकाग्र करके एकान्त में रहो और ईश्वर-भजन करो।

मन को जो बहुत भाता है, वह मत करो। मन जो माँगे वह उसे मत दो। इस तरह धीरे-धीरे मन नियन्त्रित होता है।

मन को धोने के लिये बाहर का पानी काम नहीं आता। आँख से निकले प्रेम के आँसुओं से ही भन धुलता है, निर्मल होता है।

मन को निरन्तर सद् प्रवृत्ति में ही लगाये रखो। मन खाली रहेगा तों पाप-कर्म में प्रवृत्त होगा।

मन को बार-बार समझाओ कि ईश्वर के सिवाय मेरा कोई नहीं है, विचार करो कि मेरा कोई नहीं है, मैं किसी का नहीं हूँ।

मन को पाप करने की छूट मत दो।

मन को विवेक के अधीन रखो। जीव की तृप्ति भोगों में नहीं है, त्याग में है। मन भागे, तब उसे विवेक की लकड़ी मारो। मन वश में आयेगा।

मन को सदा पवित्र रखो। कारण, मृत्यु के बाद भी मन साथ ही जानेवाला है।

मन को सुधारोगे तो स्वयं भी सन्त बन सकोगे।

मन चंचल हो गया है, ऐसा जिसे प्रतीत हो, उसे आत्मदर्शन हुआ है। एक क्षण भी संसार की जड़ वस्तुओं से सम्बन्ध न हो जाये, इसका ध्यान रखो। दूसरों की पंचायत में मत पड़ो।

मन में किसी को रखोगे तो प्रभु-भजन में विघ्न होगा।

मन में जब तक जड़ पदार्थ एवं अन्य जीव आते है, तब तक वहाँ भगवान नहीं आते। अधिक भटकनेवाले का मन और बुद्धि भटकते हैं।

मन में पाप का विचार आए तो उसे उसी क्षण कांट दो। जिसके पेट में एक बार पाप आ गया, वह उसे छोड़ता नहीं। कदाचित् पाप हो जाए तो प्रभु के पास जाकर विलाप करो।

मन में विकार उत्पन्न करने वाला कोई चित्र घर में नहीं रखना चाहिए। मन में उस चित्र के होने से कृष्ण-भजन में विघ्न होगा।

मन मैला हो तो सेवा में आनन्द नहीं आता।

मन शुद्ध होने पर अपने आप हृदय में ज्ञान प्रकट होता है।

मन शुद्धि के लिये संत-समागम करो।

मन सांसारिक विषयों में और शरीर भगवान् की सेवा में हो तो सेवा में आनन्द नहीं आता।

मन साथ में है, अतः जहाँ जाओगे वहीं पाप करने का प्रसंग आ सकता है।

मनुष्य अत्यधिक विलासी हो गया है, अतः ज्ञान-मार्ग से उसका ईश्वर के पास पहुँचना कठिन हो गया है।

मनुष्य अहंकार से दुःखी होता है।

मनुष्य एक तरफ पुण्य करता है तो दूसरी तरफ पाप भी कर रहा है। परिणाम में कुछ भी हाथ नहीं लगता।

मनुष्य का कर्म ही मनुष्य को सुख-दुःख देता है।

मनुष्य का जीवन पवित्र हो तो भगवान् बिना आमन्त्रण के भी उसके घर आते है।

मनुष्य का बड़ा दोष यह है कि वह सदा स्वयं को निर्दोष समझता है।

मनुष्य का बड़े से बड़ा शत्रु काम है। उसी में से अन्य दुर्गुण उत्पन्न होते हैं और अन्त में उसका परिणाम बुद्धिनाश के रूप में प्रकट होता है।

मनुष्य का शत्रु बाहर नहीं, मन में है। भीतरी शत्रुओं को खत्म करोगे तो संसार में तुम्हारा कोई शत्रु नहीं रहेगा।

मनुष्य का सच्चा मित्र धर्म है। सर्व-सुखों का साधन धन नहीं, धर्म है।

मनुष्य किये हुए पाप को याद करे तो उसे ज्ञात होगा कि मुझे जो मिला है, मैं उसके भी लायक नहीं हूँ। भगवान् योग्यता से अधिक देते हैं।

मनुष्य की अपनी दुर्बलता प्रभु-भजन में विघ्न कारक है।

मनुष्य की जैसी दृष्टि होगी, संसार उसे वैसा ही दिखेगा।

मनुष्य के जन्म से पहले उसका कोई संबंधी नहीं था। मरने के बाद भी उसका कोई संबंधी नहीं रहेगा।

मनुष्य के लिये आवश्यक है कि वह किसी तपस्वी साधु की सेवा करे। सेवा से विद्या सफल होती है। मात्र प्रयत्न से मिली हुई विद्या अभिमान को साथ लाती है। संत-सेवा से मिलने वाली विद्या के साथ विवेक और विनय आते हैं।

मनुष्य को अपनी भूल जल्दी दिखाई नहीं देती। संसार में किसी भी प्राणी का दोष मत देखो। अपने मन को सुधारो। अपनी भूल का दिग्दर्शन कराने वाले के उपकार को कभी नहीं भूलो।

मनुष्य को अन्तिम श्वास तक मन के ऊपर विश्वास नहीं करना चाहिये। मन दगाबाज है।

मनुष्य को एक दिन में 21000 श्वास लेने पड़ते हैं। अतः प्रत्येक श्वास में भगवान् का नाम लो।

मनुष्य को सदा-सब जगह भरपूर शक्ति से भगवान् श्रीहरि के नाम का ही श्रवण, कीर्तन एवं स्मरण करना चाहिए।

मनुष्य चाहे तो नर से नारायण बन सकता है।

मनुष्य जब अभिमान में होता है तब वह जो कर्कश वाणी बोलता है, उसका असर मन के ऊपर पड़ता है।

मनुष्य जब तक क्रोधविहीन नहीं होता तब तक उसका उद्धार नहीं होता।

मनुष्य जब निर्बल होता है तब उसके मन में पाप और विकार आते हैं। घंटे के आरम्भ में प्रथम पांच मिनट ईश्वर का ध्यान करो। फिर तुम से पाप नहीं होगा।

मनुष्य-जीवन का विलासी होना, ज्ञान के न टिकने का कारण है।

मनुष्य-देह में नौ छिद्र हैं, उनसे जीव बाहर निकल जाता है। इसलिए इन्द्रियों को प्रभु में लगाओ।

मनुष्य पाप करे तो वह पशु होता है।

मनुष्य पाप को मन में छिपाये रहता है। इससे उसका जीवन खराब होता है।

मनुष्य प्रेम किये बिना नहीं रह सकता। किन्तु भगवान् को छोड़कर किसी अन्य से किये गये प्रेम का परिणाम कष्टप्रद होता है। धीरे-धीरे सुख-स्नेह छोड़ोगे तो प्रभु के साथ प्रेम बढ़ेगा।

मनुष्य-प्रेम खंडित है। कुछ प्रेम वह पैसे से, कुछ स्त्री से, कुछ संतान से और थोड़ा प्रेम कपड़ों से करता है।

मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, किन्तु आशा-तृष्णा बूढ़ी नहीं होती। विषय भोगने से काम-वासना शांत नहीं होगी। अग्नि में घी की आहुति देने से जैसे

आग प्रचण्ड होती है, उसी प्रकार भोग भोगने से, भोग-वासना अधिकाधिक प्रबल होती है।

मनुष्य भोजन में नियम रखता है, भजन में नहीं। भजन किंये बिना जो खाता है, वह पाप खाता है।

मनुष्य मकान के ऊपर, अंगूठी के ऊपर एवं शरीर के ऊपर अपना नाम लिखता है। अधिक प्रचार से पुण्य का नाश होता है।

मनुष्य में जब तक विषय-रस और विषयासक्ति है, तब तक शरीर एवं आत्मा अलग-अलग हैं, उनमें अनुभूति नहीं है।

मनुष्य में ज्ञान आता तो है, किन्तु वह टिकता नहीं।

मनुष्य मृत्यु की चिन्ता रोज करे तो उसकी पाप करने की इच्छा ही नहीं होगी।

मनुष्य वासना का गुलाम है। इसी से उसका पतन होता है। पूतना आँखों में से आती है।

मनुष्य विपदा आने पर ही भगवान् को पुकारता है।

मनुष्य-शरीर उत्तम है।

मनुष्य-शरीर पुण्य कर्म करने के लिए मिला है। मनुष्य-शरीर परमात्मा की आराधना के लिए है। परमात्मा के दर्शन से बहुत शान्ति प्राप्त होती है। परमात्मा के दर्शन से जिसे आनन्द मिला है, उसके मन पर सांसारिक दुःखों का असर नहीं होता।

मनुष्य संसार के पीछे पागल बना हुआ है। यदि संसार से विमुख होकर भगवान् में अनुरक्त होवे तो जीव और शिव एक हो जायें।

मनुष्य साधना करता है। साधना से कुछ सिद्धि मिलती है। इससे वचन-सिद्धि आती है। वचन-सिद्धि से प्रसिद्धि मिलती है और लोग पीछे पड़ जाते हैं। इससे अभिमान आता है। अभिमान से पतन होता है। चेलों की जमात साधक का गुणगान करती है। साधक सोचता है

कि मैं भी कुछ हूँ। साधना की उपेक्षा के कारण यह 'हूँ' (अभिमान) आता है।

मनुष्य साधना करे तो ईश्वर साथ देते हैं। यदि साधना में निष्ठा न रहे तो ईश्वर छोड़ देते हैं। अहंकार या अभिमान हो जाये तो भी भगवान् छोड़ देते हैं। साधना का अभिमान नहीं करो।

मनुष्यों का अधिक समय सोने, धन कमाने और बातें करने में जाता है। कुछ लोगों का पढ़ने में जाता है। अधिक पढ़ने से शब्द-ज्ञान तो बढ़ता है, किन्तु कभी-कभी अभिमान भी बढ़ता है।

मन्दिर में किया गया थोड़ा-सा पाप महापाप होता है।

मन्दिर में भगवान् का दर्शन करके, बाहर आने के बाद सब प्राणियों में भगवान् के दर्शन करो।

मरते समय मनुष्यों को परमेश्वर का ध्यान करना चाहिए, जिससे भगवान् उन्हें अपने स्वरूप में स्वीकार कर लें।

मरने के बाद धन नहीं, धर्म साथ जाता है। अतः धन से धर्म श्रेष्ठ है। धर्म के अनुकूल धन का उपार्जन करो।

मरने से पूर्व वासना का त्याग करो। वैर का त्याग करो। वासना पुनर्जन्म का कारण होती है।

महापुरुषों की आदर्श-दृष्टि सदा साथ रखना।

महापुरुषों की सेवा मुक्ति का द्वार है।

महालक्ष्मी : धर्म, नीति, उद्योग एवं योग्य रीति से प्राप्त किया हुआ धन महालक्ष्मी है। यह धन उत्तम कार्यों में ही प्रयुक्त होता है।

माँ के दोष से बालक दुश्चरित्र बनता है। पिता के दोष से मूर्ख, वंश-दोष से भीरु एवं स्वदोष से दरिद्री बनता है।

माता-पिता की सेवा करोगे तो बुढ़ापे में तुम्हारे बालक तुम्हारी सेवा करेंगे।

माता, पिता, गुरु, अतिथि और सूर्य ये प्रत्यक्ष देव हैं, इनकी सेवा करो।

माता-पिता लक्ष्मी-नारायण के रूप हैं। उन्हें वंदन करो।

माता सुशिक्षिता हो तो बालक को हजार शिक्षकों से अधिक शिक्षण दे सकती है।

मानव- जीवन की अन्तिम परीक्षा मृत्यु है। जिसका जीवन सुधरा हुआ है, उसकी मृत्यु भी सुधर जाती है। मृत्यु तब सुधरती है जब प्रत्येक क्षण सुधरता है। जीवन उसका सुधरता है, जिसका समय सुधरा हुआ होता है। समय उसी का सुधरता है, जो समय का मूल्य जानता है। क्षण-क्षण और कण-कण का सदुपयोग करो।

मानव-जीवन क्षण-भंगुर है, ऐसा मान कर मनुष्य निरपेक्षता धारण करे, नम्र बने।

मानव-जीवन भोग के लिए नहीं, तप के लिए है।

मानव-शरीर पाकर भी जो मनुष्य विषयों के पीछे लगा रहता है, वह मनुष्य अमृत देकर बदले में विष लेता है।

मानव-शरीर भोग भोगने के लिए नहीं मिला है। यह तो भजन द्वारा भगवान् की प्राप्ति का साधन है।

मानव-शरीर को विषय-सुखों में नष्ट मत करो।

मानवी सेवा का अत्युत्तम समय प्रातः 4 से 5 ½ तक है।

मानसिक सेवा सरल नहीं है। कोई लौकिक विचार आया तो समझो कि मानसिक सेवा भंग हो गयी।

माया के अधीन जो हो जायें, वे जीव हैं।

माया के साथ अधिक प्रीति न होवे, इसके लिए सदैव सतर्क रहो।

मितभाषी व्यक्ति सत्यवादी होता है।

मुझमें अभिमान नहीं है, यह मानना भी अभिमान है।

मूर्ति में प्रेम रखो।

मूर्ति में भगवद्भाव न आये तब तक प्रत्येक पदार्थ में ईश्वर-भाव जाग्रत नहीं होगा।

मृत्यु अवश्यम्भावी है। एक दिन तो काल का आक्रमण होगा ही। सातों दिनों में-से कोई एक दिन अपनी मृत्यु के लिए निश्चित है। इसलिए राजा परीक्षित की तरह काल को न भूलो।

मृत्यु कब होगी– इस पर विचार मत करो।

मृत्यु का अर्थ है-जीवन का हिसाब बताने का दिन।

मृत्यु का सुधार आँख, मन, वाणी एवं धन का सदुपयोग करने से होता है।

मृत्यु के भय से भगवान् में प्रीति बढ़ती है।

मृत्यु के लिए प्रति क्षण तैयार रहो। जीवन ऐसा जियो कि तुम सावधान रहो और मृत्यु आये।

मृत्यु को सुधारना हो तो प्रत्येक क्षण को सुधारो।

मेरा प्रत्येक व्यवहार भक्तिमय बने, ऐसा निश्यच करो। शुद्ध व्यवहार को ही भक्ति कहते हैं।

मेरा-मेरा कहे उसे भगवान् मारता है। तेरा-तेरा कहे उसे भगवान् तारता है।

मेरी प्रत्येक इन्द्रिय भगवान को अर्पण है–एकादशी के दिन इस भाव को अपनाओ।

मैं जितेन्द्रिय हूँ, ऐसा अभिमान मत करो। मन में विषय सूक्ष्म रीति से बैठे हैं, मौका मिलते ही वे प्रकट होने लगेंगे।

मैं जो करता हूँ उसे भगवान् देख रहे हैं-ऐसा मान कर चलो।

मोक्षतत्त्व का जानकार ही पण्डित है।

मोह भोग माँगता है। प्रेम त्याग चाहता है। मोह संयोग में पुष्ट होता है। प्रेम वियोग में।

∴ य ∴

यदि बिस्तर पर जाने के बाद कोई वस्तु याद आऐ, तो समझना कि उसमें मन उलझा है। लोभी का मन द्रव्य में फँसा रहता है, कामी का स्त्री में। मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि बिस्तर में पड़ने के बाद अतिशय प्रिय वस्तु का उसे स्मरण होता है। मन जहाँ फँसा है, स्वप्न में भी वही दिखाई देता है। स्वप्न से मन की परीक्षा होती है।

यमुना-तट पर लौकिक बातें करना पाप है।

यह भक्ति का समय है, यह भोगका– इस प्रकार का भेदभाव रखने वाला प्राणी भक्ति नहीं कर सकता।

यह संसार ब्रह्म-स्वरूप है, ऐसा मानने पर ही राग-द्वेष नष्ट होते हैं।

याचक को न देना मृत्यु के समान है।

याद करोगे तो भगवान् अन्तकाल में दौड़ते हुए आयेंगे। भगवान् से यही कहो कि वे अन्त समय अवश्य आयें।

युक्ति से पाप-प्रवृत्ति को रोके, पति को परमात्मा की ओर प्रेरित करे, वही धर्मपत्नी है।

युवावस्था में काम को वश में करो। संपत्ति और सुख में रहते हुए भी युवावस्था में यदि मन की प्रवृत्ति विषयों में न हो, यह वैराग्य है।

युवावस्था में मनुष्य पशुवत होता है। अतः किसी के अनुशासन में रहो।

योग को भक्ति का साथ न मिले, तो योगी रोगी हो जाता है।

योग के पीछे शुद्ध हेतु न हो तो योगी का पतन होता है। योग-साधन से सिद्धियाँ आती हैं, किन्तु उनसे ब्रह्म की अनुभूति नहीं होती।

योगी को कभी रोग नहीं होता। यदि रोग आवे तो समझना कि उसके योग में कोई भूल हुई है।

यशोदाजी की तरह काम करते हुए तुम भी ठाकुरजी को देखते रहो।

यौवन काल में जो काम का दमन करता है उसकी वृद्धावस्था दिव्य बनती है। जीवन को सुधारने का प्रयत्न यौवन-काल में ही करना चाहिये।

★⁑ र ⁑★

रजोगुण से उत्पन्न काम-क्रोध रूपी शत्रु पाप की ओर प्रवृत्त करते हैं। अतः सत्त्वगुण बढ़ाओ और रजोगुण घटाओ।

रसोई करते हुए प्रभु का नाम लो। गीत गाना हो तो कृष्ण-भक्ति के गीत गाओं।

रात में ग्यारह बजे के बाद का समय 'राक्षस-काल' माना जाता है। इस निषेध-काल में भोजन नहीं करो।

रात में ग्यारह से साढ़े तीन तक का काल निषिद्ध काल है। इस में स्नान और भोजन नहीं करना चाहिये।

रात्रि में सोने से पूर्व एवं सुबह बिस्तर से उठने के पहले प्रभु के नाम का स्मरण करो। उत्तम विचारों की धारणा करो।

रात्रि में सोने से पूर्व सदैव प्रेमपूर्वक जप करो।

राम-कथा का एक-एक श्लोक पापनाशक है।

रामजी का एक-एक सद्गुण जीवन में उतारने का प्रयत्न करो।

रामजी की मर्यादा का पालन करो।

रामजी को याद करोगे तो सारा संसार मातृवत् दिखाई देगा।

रास्ते में चलते समय पद-पद पर भगवान् का नाम लो। पद-पद पर यज्ञ-पुण्य मिलेगा। कलियुग में नाम-निष्ठा ही मुख्य साधन है।

रास्ते में जा रही स्त्री में जिसका मन फँसे वह राक्षस। पर-स्त्री का चिन्तन करे वह भी राक्षस।

रोज प्रार्थना करो-"हे प्रभु मेरी मृत्यु के समय आप अवश्य आवें।"

रोज विचार करो कि आज प्रभु को प्रिय लगने वाला कोई काम किया या नहीं।

रोज संकल्प करो कि मेरे मरने पर ठाकुरजी मुझे लेने आयेंगे। खोटे संकल्प फलीभूत होते हैं, तो पवित्र संकल्प भी फलीभूत होंगे।

ल

लक्ष्मी के उपभोग का जीव का अधिकार नहीं है। जीव लक्ष्मी का उपभोग करना चाहे, तो लक्ष्मी थप्पड़ मारती है।

लक्ष्मी का मोह छूटने पर प्रभु-भजन शुरू होता है।

लक्ष्मी चंचला है। किसी-न-किसी गद्दी में तो वह जायेगी ही।

लक्ष्मी तभी मनुष्य को छोड़ कर जाती हैं जब मनुष्य सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है।

लक्ष्मी : नीति से जो धन प्राप्त हो वह लक्ष्मी। यह धन सदुपयोग और भोग-विलास में जाता है।

लड़का सदाचारी हो और माता-पिता दुराचारी हों तो उनकी सद्गति संभव है, किन्तु लड़का दुराचारी हो और माता-पिता सदाचारी, तो उनकी दुर्गति होगी।

लोग समझते हैं कि संपत्ति के आने से सभी सुख आ जाते हैं, परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। संपत्तिवान बनने की अपेक्षा संस्कारी बनो। उत्तम संस्कार प्राप्त करने का प्रयत्न करो।

लोभ और ममता पाप के माता-पिता हैं।

लोभ को सन्तोष से मारो। सन्तोष रखना पुण्य कार्य है।

लोभ बढ़ने से भोग बढ़ते हैं, भोगों से पाप बढ़ते हैं।

लोभी को धन से एवं अहंकारी को प्रशंसा से वश में करो।

⁑ व ⁑

वन्दन–पूजन प्रत्येक देव की करो। पर ध्यान एक ही देव का करो। ध्यान बिना साक्षात्कार नहीं होता।

वन्दन से भगवान् बन्धन में बँधते हैं।

वर्णाश्रम की मर्यादा जीव को ईश्वर की ओर ले जाने की पगडण्डी है।

वस्तु को जो देखे वह जीव। 'भाव' देखे वह ईश्वर।

वस्त्र बदलने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है हृदय–परिवर्तन की।

वाणी और पानी का दुरुपयोग करने वाले अपराधी हैं। अंत में वाणी उसे दगा देती है।

वाणी का दोष सब पापों का मूल है।

वाणी, विचार, व्यवहार एवं सदाचार से जो सबको प्रसन्न रखे, उसके यहाँ भगवान् आते हैं।

वाणी, व्यवहार और विचार शुद्ध रखो। यह तपश्चर्या है।

वाणी से कीर्तन और आँखों से दर्शन करने से मन शुद्ध होता है।

वासना और भोगों की वृद्धि से संसार विषतुल्य हो जाता है।

वासना का नाश एवं आसक्ति का त्याग करो।

वासना किसी को आगे नहीं बढ़ने देती।

वासना के अधीन हुए मनुष्य को विलासी जीवन पसन्द होता है। जो विलासी जीवन बिताता है, उसे ईश्वर के स्वरूप का बोध नहीं होता। वह कभी ईश्वर को पहचान नहीं सकता। मनुष्य में एक–एक इन्द्रिय के विषय–भोग की लालसा बढ़ती है। घृणा भी होती है, किन्तु वह टिकती नहीं। विषयों के आनन्द परिणाम में बहुत दुःखदायी होते हैं।

वासना के अनुसार ही जीव का शरीर बदलता है।

वासना को उच्चतम बनाओ। सत्संग से वासना उच्चतम बनती है।

वासना को जीतना ही शौर्य है।

वासना पहले शूर्पणखा के समान सुन्दर लगती है। बाद में अपना असली रूप दिखाती है।

वासना बुरी है। वासना के अनुसार विषय-सुख न भोगे तो मन व्यग्र होता है। भोगे तो मन ज्यादा भोगने की इच्छा करता है। मन के ऊपर सदा भक्ति का अंकुश रखो।

वासना से प्रेरित जीव अन्तरात्मा के रोकने पर भी पाप करता है। वासना के वेग में बहुधा ज्ञान बह जाता है। अतः पाप हो जाता है। कभी-कभी ऐसे प्रसंग भी आते हैं कि पाप किये बिना छुटकारा नहीं मिलता। ऐसे क्षणों में यदि दूसरा विकल्प न हो तो भगवान् को साथ रखकर कम-से-कम पाप करना।

वासना ही पुनर्जन्म का कारण होती है।

वासुदेव गायत्री का सदैव जप करो।

विचार करने से वैराग्य आता है।

विचार करो तो पवित्र विचार करो। खोटे विचार करने से मन बिगड़ता है।

विचार सूक्ष्म रूप में अन्दर रहते हैं।

विधवा स्त्री गंगा की तरह पवित्र है।

विधिपूर्वक यात्रा करने से ही उसका पुण्य मिलता है। यात्रा पर जाने से पूर्व ये प्रतिज्ञाएँ करनी चाहिए : आज से मैं ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा। आज से मैं क्रोध नहीं करूँगा। आज से मैं वृथा भाषण नहीं करूँगा।

विधिपूर्वक व्रत करने से पाप नष्ट होते हैं।

विधि में दो नियमों का ध्यान रखो। ब्रह्मचर्य का पालन करो तथा दूसरे का कुछ खाओ नहीं। पाँच करोड़ जप करने वाले को ज्ञान मिलता है। तेरह करोड़ जप करने से जीव और ईश्वर का मिलन होता है।

वियोग में प्रेम पुष्ट होता है।

विरह के विशेष तीव्र होने पर ही परमात्मा मिलते हैं।

विलासी लोगों में रहकर निर्विकार रहना अत्यन्त कठिन है। शरीर से न सही, आँख से भी पाप हो जाता है।

विलासी जीवन भक्तिपूर्ण जीवन का विनाशक होता है।

विलासी मनुष्य ज्ञान का अनुभव नहीं कर सकते।

विवाह का अर्थ हैः दो शरीर एक मन।

विवाह किये बिना, विकार एवं वासना का नाश नहीं होता।

विवाह के पश्चात् अधिकतर मनुष्य पशुओं की तरह जीवन बिताते हैं।

विवेक से काम का नाश तो होता है, किन्तु क्रोध का नाश मुश्किल है।

विवेक से मनुष्य भोग औंर तप दोनों का सेवन कर सकता है।

विषय-चिंतन से मन जीवित रहता है और विषय त्याग से मन मर जाता है। मन को कोई आधार चाहिये। मन को प्रतिकूल विषयों से अनुकूल विषयों में ले जाओ।

विषय-पीड़ा अधिक हो तो भगवन्नाम कीर्तन करो। भगवन्नाम विषय को अमृत बनाता है।

विषयों के चिन्तन से आत्मशक्ति का नाश होगा।

विषयों को न भोगने पर भी उनके चिन्तन मात्र से मनुष्य पतित होता है।

विषयों में जब तक वैराग्य न आये, तब तक भक्ति का आरम्भ नहीं होता।

विषयानन्दी व्यक्ति को ब्रह्मानन्द का आनन्द समझ में नहीं आता।

वृद्धावस्था में देह की सेवा होती है; देव की सेवा नहीं।

वृद्धावस्था में प्राण बहुत अकुलाते हैं।

वृद्धावस्था में बुड्ढा सत्रह बार बीमार पड़ता है। अन्त में अठारहवीं बार काल आता है, अतः मरता है।

वेदान्त का अधिकार सब को नहीं है। वेद का अधिकार विरक्त को ही है।

वेश्या को देखकर अजामिल का मन बिगड़ा था। सिनेमा देखने से क्या होता होगा?

वैर एवं वासना से नया प्रारब्ध बनता है एवं उससे फिर जन्म लेना पड़ता है।

वैर-वासना को साथ लेकर जो मरता है, उसकी सद्‌गति नहीं होती। निश्चय करो कि किसी के साथ वैर नहीं रखोगे।

वैराग्य अन्दर होना चाहिये, जगत् को बताने के लिये नहीं।

वैराग्य और संयम के बिना ज्ञान नहीं पचता।

वैराग्य के बिना की भक्ति निःसत्व है। भोग भक्ति में बाधक हैं।

व्यर्थ कुछ न बोले, यह मौन है। मन में न बोलना भी मौन है। मौन से मन को शान्ति मिलती है। मानसिक पाप नष्ट होते हैं।

व्यर्थ भाषण के समान कोई पाप नहीं है। वाणी को तोलकर बोलो।

व्यवहार में आत्मा इतना घुल-मिल जाता है कि मन जो पाप करता है, उसकी भी उसे खबर नहीं होती।

व्यवहार में शुद्धता का अर्थ है, शुद्धि का आगमन।

व्यसन और फैशन में जिसके पैसे का दुरुपयोग हो, वह भक्ति-पथ पर आगे नहीं बढ़ सकेगा।

*** श ***

शक्ति का दुरुपयोग करने वाला राक्षस है। शक्ति, सम्पत्ति एवं समय का विवेक से उपयोग करने वाला देवता बनता है।

शत्रु के प्रति भी सद्‌भाव रखो। ऐसा करने से भगवान् तुम्हारे पक्ष में आयेंगे और तुम्हारे शत्रु को दंड देंगे।

शब्द-ज्ञानी जल्दी समर्पण नहीं करता। उसके मन में यह भ्रम होता है कि

मैं ज्ञानी हूँ। अभिमान किसी को नम्र नहीं होने देता। जहाँ विनय हो, वहाँ विविध सद्गुण आते हैं। जहाँ अभिमान हो, वहाँ दुर्गुण आते हैं।

शरीर अर्पण याने अहंकार (अभिमान) अर्पण करना। दान देने वाला दीन न बने तो दान असफल होता है।

शरीर की उत्पत्ति ही काम से हुई है। अतः कलियुग में योगमार्ग और ज्ञानमार्ग से ईश्वर-प्राप्ति कठिन है। हरि-कीर्तन सबसे सरल उपाय है।

शरीर को सादा रखो। शरीर मात्र भस्म है-एक मुट्ठी राख। अतः इसका विशेष लाड़-प्यार एवं शृंगार मत करो।

शरीर से अधिक पाप नहीं होता, पाप मन से अधिक होता है।

शरीर से अधिक लाड़-प्यार न करो।

शरीर से पाप होना ही है - ऐसा लगे तो भगवान् के नाम का कीर्तन करो। परमात्मा को साथ रखकर पाप करने से पाप-वासना हटती है। भगवान् उसे बचाता है।

शरीर से भगवान् की खूब सेवा करोगे तो तमोगुण कम होगा। ईश्वर-सेवा में धन खूब खरचोगे तो रजोगुण कम होगा। तन और धन लगाओ, किन्तु मन नहीं लगाओ, तो भगवान् प्रसन्न नहीं होते। मन से सेवा न हो तो सेवा में आनन्द नहीं आता। मन विषयों में और तन ठाकुरजी के पास- यह नहीं चलेगा। सेवा में आँसू आयें तो मानना कि भगवान् ने कृपा की है।

शरीर-सौन्दर्य नहीं, हृदय का सौन्दर्य देखो। एक ईश्वर ही नित्य सुन्दर है।

शाप का उत्तर जो आशीर्वाद से दे, वह संत।

शाब्दिक उपदेश का असर जल्दी नहीं होता है। क्रियात्मक उपदेश तत्काल असर करता है।

शाम के बाद स्त्रियों को घर से बाहर नहीं भटकना चाहिए।

शास्त्र में पत्नी को काम-पत्नी नहीं, धर्म-पत्नी कहा है।

शुद्ध आचार शुद्ध विचारों का आधार होता है।

शुद्ध प्रेम में दूसरों को सुखी करने की भावना होती है।

शुद्ध प्रेमलक्षणा भक्ति भगवान् को बाँधती है। ज्ञान और योग भगवान् को बाँध नहीं सकते।

शुभ विचार भगवान् पूर्ण करते हैं।

श्रद्धा दृढ़ होनी चाहिए।

श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन से ज्ञान बढ़ता है।

श्रीकृष्ण एवं ईश्वर में मन रखते हुए सब व्यवहार करो।

श्रीकृष्ण-कथा जो बार-बार सुने, भगवान् उसका मन आकर्षित कर लेते हैं।

श्रीकृष्ण के लिए यदि कोई एकान्त में विलाप करता है तो कन्हैया आकर उससे मिलता है।

श्रीकृष्ण तुम्हारे शरीर-रथ के सारथी हों तो रथ लक्ष्य पर पहुँचेगा। मन सारथी होगा तो रथ गड्ढे में गिरेगा।

श्रीकृष्ण भगवान् को जो प्राणों का अर्पण करते हैं, उन्हें पाप करने की इच्छा नहीं होती।

श्रेष्ठ धन धर्म है।

* * स * *

संत-कृपा तीन प्रकार से होती है। सन्त जिस पर बारम्बार दृष्टिपात करें, उसका जीवन सुधरता है। माला फेरते समय जिसका स्मरण करते हैं, उसका जीवन सुधरता है तथा जिसे प्रेम-दृष्टि से देखें, उसका भी कल्याण होता है।

संत का स्मरण पाप करने से रोकता है।

संत की परीक्षा जाति तथा वर्ण से नहीं होती। सन्त की परीक्षा आँख एवं मनोवृत्ति से होती है।

संतधर्म को जीवन में उतारने से स्थूलवासना का नाश तो होगा, किन्तु मन एवं बुद्धि में जो सूक्ष्मवासना रहती है, उसका नाश नहीं होगा। जिसका अन्तिम जन्म है, उसी का मन शुद्ध होता है। मेरा मन शुद्ध है, ऐसी कल्पना मत करो।

संतपुरुष तीर्थों को पवित्र करते हैं।

संताप मत करो। हर्ष मत करो। संतोषी बनो।

संतोष न होने से मनुष्य पाप करता है।

संतों की दृष्टि शुद्ध होती है।

संतों का दर्शन, मनुष्य को निर्विकार बनाता है।

संतोषी पुरुष ही सच्चा धनवान है।

संध्या करने से बुद्धि का तेज बढ़ता है।

संपत्ति आये तो उसका उपयोग परोपकार में करो।

संपत्ति का अच्छे मार्ग में उपयोग हो तो चाहे जितने विघ्न आएँ, मन की स्थिरता बनी रहेगी। पैसे का सदुपयोग न हो तो मरने तक शान्ति नहीं मिलती।

संपत्ति को जो मौज-शौक में नष्ट करे, वह राक्षस है।

संपत्ति में जो होश-हवास भुला देता है, वह दरिद्री होने तक बेहोश ही रहता है।

संपत्ति में होश मत खोना और विपत्ति में रोना नहीं।

संयम और सदाचार को धीरे-धीरे बढ़ाते जाओ।

संयम धीरे-धीरे बढ़ाने से भक्ति बढ़ती है। जिसे एक बार त्याग दिया, पुनः इन्द्रियों को उस विषय में आसक्त (प्रवृत्त) नहीं होने दो।

संयम, सदाचार एवं उत्तम संस्कारों से शान्ति मिलती है। सम्पत्ति से शान्ति नहीं मिलती। सम्पत्ति से विकार और वासना बढ़ते हैं।

संयम, सदाचार, स्नेह, एवं सेवा-सत्संग के बिना ये गुण नहीं आते।

संयोग में चक्षु-दर्शन, वियोग में मानस-दर्शन।

संयोग में दोष-दर्शन एवं वियोग में गुण-दर्शन। यही जीव का स्वभाव है।

संसार ऐसा है कि आँखें बंद करने पर भी दिखाई देता है। मन में स्थित संसार विघ्नकारक है।

संसार की मोहिनी का मोह, सौन्दर्य का मोह, विषयों का मोह छोड़ो। जैसे-जैसे परमात्मा में प्रेम बढ़ेगा वैसे-वैसे विषयों से घृणा होने लगेगी।

संसार के किसी पदार्थ से इतना स्नेह मत करो कि वह (स्नेह) प्रभु-भक्ति में विघ्न करे।

संसार के किसी भी ज़ीव से विरोध मत रखो। जगत् के पदार्थों के भोगने की वासना का त्याग करो।

संसार के जड़ पदार्थों से अधिक स्नेह करना, जड़ता को बढ़ाना है।

संसार को काम-दृष्टि एवं भोग दृष्टि-से मत देखो। जब तक दोष-दृष्टि रहेगी, तब तक देव-दृष्टि प्राप्त नहीं होगी।

संसार को त्यागने की जरूरत नहीं, विषयों का मोह त्यागो।

संसार खराब नहीं है, किन्तु मन अशुद्ध होने के कारण जगत् बिगड़ा हुआ नजर आता है।

संसार दावाग्नि है, यह चारों ओर से जीवों को जलाती है। यह चारों तरफ से सुलगती है। दुःख रूप अग्नि सबको जलाती है। इसलिये आँखें बन्द रखो और भगवान् के नाम का चिन्तन करो। इससे प्रभु दुःख दूर करेंगे।

संसार में पाप है, ऐसी कल्पना मत करो। पाप हो तो उसका जवाब तुम्हें नहीं देना है। जो पाप तुम्हारे मन में है, उसीका जवाब तुम्हें देना पड़ेगा।

संसार में सब जानते हैं कि अकेले ही जाना है। फिर भी पुरुष के बिना स्त्री को और स्त्री के बिना पुरुष को चैन नहीं पड़ता।

संसार में स्वार्थ और कपट का संबन्ध है। पति–पत्नी के प्रेम में भी स्वार्थ और कपट होता है।

संसार मेरे लिए क्या कहता है, यह जानने की इच्छा मत रखो, किन्तु जगदीश्वर मेरे लिए क्या कहते हैं, इसका ध्यान रखो।

संसार–सुख में फँसा हुआ व्यक्ति ईश्वर–भजन नहीं कर सकता।

सच्चा वैष्णव दूसरे का दोष नहीं देखता। पुनः–पुनः वह अपना दोष देखता है।

सच्चा वैष्णव वह है जो अपने दोषों पर विचार करता है।

सच्चे वैष्णव जैसे ठाकुरजी का दर्शन करने के लिए आतुर रहते हैं, उसी तरह ठाकुरजी भी उन भक्तों को दर्शन देने के लिए आतुर रहते हैं।

सज्जनता सन्त–मिलन का कारण बनती है।

सतत उद्योग करने वाले के घर में ऋद्धि–सिद्धि निवास करती हैं।

सतत श्वास–प्रतिश्वास में भगवान् का स्मरण रहे, तो पाप नहीं हो सकता।

सत्कर्म यज्ञ कहलाता है। यज्ञ से चित्त शुद्ध होता है।

सत्कर्म करने के बाद कहो, ठाकुरजी ने कृपा की और मुझे निमित्त बनाया – मेरे हाथ से सत्कर्म कराया।

सत्कार्य का अपने मुख से बखान मत करो।

सत्कार्य का संकल्प करोगे तो भगवान् बल प्रदान करेंगे।

सत्ता मिलने से मनुष्य पागल हो जाता है।

सत्य ईश्वर का स्वरूप है, असत्य के बराबर कोई पाप नहीं है।

सत्य बोलना भी यज्ञ है।

सत्त्वगुण के बढ़ने से नींद कम आती है।

सत्संग ईश्वर-कृपा से मिलता है, किन्तु कुसंग में न पड़ना तुम्हारे हाथ में है।

सत्संग करो। तुम सन्त थे, अतः तुम्हें सन्त मिलेंगे।

सत्संग न हो तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु विषयी पुरुष का संग कभी नहीं करो। कामी का संग छोड़ना तुम्हारे हाथ की बात है।

सत्संग से मनुष्य को अपनी भूलों का ज्ञान होता है।

सदाचारी पुत्र माता-पिता को सद्गति प्रदान करता है।

सदा यही सोचो कि भगवान् कृष्ण तुम्हारे साथ हैं।

सन्त मिले तो उनसे अपनी लौकिक बात नहीं पूछना ।

सन्त-समागम तथा सदाचार से सतोगुण बढ़ता है।

सन्त हुए बिना सन्त को नहीं पहचाना जा सकेगा।

सन्ध्या समय लक्ष्मी जी घर आती हैं, उस समय घर बन्द हो तो 'जय श्रीकृष्ण' कहकर लक्ष्मीजी भी लौट जाती हैं।

सबका आशीर्वाद लोगे तो भगवान् तुम्हारे घर आयेंगे। किसी की दुःशीष मत लो।

सबका कल्याण हो– विवेक से ऐसा बोलना ही सत्य है, इसी प्रकार बोलो।

सब कामनाओं का त्याग ही तप है।

सबके साथ प्रेम करो अथवा प्रेम केवल प्रभु के साथ करो।

सबके प्रति समभाव रखने से सत्कार्य सफल होते हैं।

सब के साथ मैत्री न हो तो कोई-बात नहीं, किन्तु किसी के साथ वैर नहीं करो। बैर न करना मैत्री करने के समान है।

सबको खुश रखे, उसके यहाँ भगवान् आते हैं।

सबको दान दो। उत्तम में उत्तम दान मान-दान है। प्राणी शिव का स्वरूप है। यह मानकर सबको मान दो।

सबको यश प्रदान करो, अपयश अपने सिर लो। इससे ठाकुरजी प्रसन्न होंगे। जीव इतना दुष्ट है कि स्वयं यश प्राप्त करना चाहता है और दूसरों को अपयश का भागी बनाना चाहता है।

सबको वन्दन करो। सबका आशीर्वाद ले कर जो घर से चलता है, उसे मार्ग में सन्त मिलते हैं।

सबको सम्मान दोगे तो तुम्हारा जीवऩ मिश्री के समान मीठा रहेगा।

सब तरह से शोचनीय व्यक्ति वह है जो समय और संपत्ति का दुरुपयोग करता है, जो दूसरों का अहित करता है एवं हरि का भजन नहीं करता।

सब दोषों की जड़ अभिमान है।

सब मन्त्रों के आचार्य शिवजी हैं। शिवजी को गुरु मान कर मन्त्र-विद्या प्राप्त करनी चाहिए।

सब में ईश्वर भाव रखना तप है। सत्य और प्रिय बोलना वाणी का तप है। पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य अहिंसा ये शरीर के तप हैं।

सब विषयों से मन को दूर रखो।

सब समझते हैं कि असत्य बोलना पाप है। किसी को दुःख देना पाप है। फिर भी पाप होता है।

समता सिद्ध करने के लिए सब में समता रखो। व्यक्तिगत ममता दूर करो।

समय का सदुपयोग करो। संपत्ति का सदुपयोग करो। मनुष्य संपत्ति और समय का दुरुपयोग करता है, क्योंकि उसका अधिक समय फैशन और व्यसन में जाता है।

समर्थ होकर भी जो सहन करे, वही सन्त है।

समाज में पाप प्रकट हो जाये तो पाप की आदत छूटती है।

समाज-सुधार की भावना उत्तम है। किन्तु उसके पीछे अहंकार आता है।

समृद्धि में ज्ञान-बोध नहीं रहता। दरिद्र नहीं होने तक वह आता भी नहीं।

सहारा लेना हो तो ईश्वर का लो, किसी और का नहीं।

सहिष्णुता सुख देती है। संत अत्यधिक सहिष्णु होते हैं।

सांसारिक पदार्थों में आसक्ति मत रखो।

सांसारिक प्रवृत्ति एकदम मत छोड़ो। उन्हें विवेक से कम करो।

सांसारिक विषय संसारी जीवों को बार-बार जलाते हैं।

सांसारिक विषयों में अरुचि हो तो ईश्वर में रुचि बढ़ेगी। ईश्वर को छोड़कर लौकिक कार्यों को महत्त्व न दो। यदि महत्त्व दोगे तो भगवान् तुम्हारे लौकिक कार्यों को अधिक बिगाड़ेंगे।

सांसारिक सुख भोगने की लालसा हो तो समझना कि तुम अभी सोये हुए ही हो।

साक्षात्कार होने के बाद सावधान रहना। परमात्मा की अनुभूति होने के वाद जो भजन छोड़ता है, वह गिरता है।

सात्त्विक आहार से सहिष्णुता आती है। भूख सहन करने से व्यक्ति सुखी होता है।

सात्त्विक वातावरण हृदय को सुधारता है। दूषित वातारवरण हृदय को बिगाड़ता है।

साधक को खंडन-मंडन के प्रपंच में नहीं पड़ना चाहिए। अनादि काल से मन को विषयों का चिन्तन करने की आदत पड़ी है। वही मन श्रीकृष्ण-कथा का चिंतन करे; कान श्रीकृष्ण-कथा का श्रवण करे तो विषय-चिन्तन की आदत छूटेगी। इन्द्रिय-रूपी गोपियों का प्रभु के साथ परिणय कराओ।

साधक को जीवन के अन्तिम श्वास तक सावधान रहना चाहिए।

साधक जब ध्यान आरम्भ करता है तब मन के चंचल होने से उसे ईश्वर-दर्शन नहीं होते। जिस समय अंधेरा दिखाई देता है, उस

समय निराश न होकर अभ्यास चालू रखोगे तो अंधेरे में से प्रकाश प्रस्फुटित होगा।

साधक पुरुष को स्त्री का संग नहीं करना चाहिए और साधक स्त्री को पुरुष का संग नहीं करना चाहिए।

साधना करो, किन्तु साधना का अभिमान नहीं करो। साधना में लगा हुआ मनुष्य जब दीन होकर रुदन करने लगता है, तो भगवान् कृपा करते हैं

साधना की आदत ऐसी पड़ जाती है कि छूटती नहीं है।

साधना से अनेक सिद्धियाँ मिलती हैं। भगवान् भी मिलेंगे। साधना में लगे रहो।

साधारणतया कामान्ध होने से पुरुष स्त्री के अधीन होता है। अतः पत्नी चाहे तो पति को सुधार सकती है। पत्नी योग्य हो तो पति को भगवद्-भक्ति में प्रवृत्त कर सकती है।

साधु की निन्दा और साधु का अपमान सर्वनाश कर देते हैं।

साधु-ब्राह्मण सद्भाव से आते हैं। उनका अनादर मत करो, उन्हें शिरोधार्य करो।

साध्य की प्राप्ति होने पर लोग प्रायः साधन की उपेक्षा करने लगते हैं।

सायंकाल प्रभु के नाम का जप करो।

सारे काम करने के बाद बचे हुए समय में जो भक्ति हो, वह मर्यादा-भक्ति कहलाती है। ईश्वर किसी भी रूप में आते हैं। तुम उनका सम्मान नहीं करोगे तो वे तुम्हें रुलायेंगे। ईश्वर किस रूप में घर आयेंगे, यह नहीं कहा जा सकता। अतः जो भी आये, उसी का सम्मान करो।

सारे जगत् को कोई खुश नहीं कर सका।

सारे दिव्य सद्गुण जिस पुरुष में एकत्र हो जायें, वह भगवान् है।

सिद्धान्तों का ज्ञान प्रायः सभी को है पर पुण्यवान् पुरुष ही उन्हें जीवन में उतार सकते हैं।

सिद्धान्तों को जो अपने जीवन में उतारे, वह ज्ञानी है।

सिनेमा देखने से आँख, शरीर, मन और अन्त में जीवन बिगड़ जाता है। पैसा खर्च करके अन्धेरे में बैठना अज्ञानता है।

सिर्फ ईश्वर के लिए जीने वाला संन्यासी है।

सिर्फ जाना हुआ ज्ञान काम नहीं आता। किन्तु जीवन-व्यवहार में उतारा हुआ ज्ञान काम आएगा।

सुख के अन्त में, दुःख के अन्त में और देहान्त के समय भगवान् की स्तुति करो।

सुख-दुःख प्रारब्ध के अधीन हैं।

सुख-सम्पत्ति मिले तो भी भगवान् का भजन नहीं छोड़ो।

सुखी रहना है तो कम खाओ और गम खाओ।

सुखी होना है तो अपने चालीसवें वर्ष से संसार को धीरे-धीरे छोड़ना शुरू करो। 51 वें वर्ष में (एकान्त) वन में चले जाओ।

सुखी होना है तो चार क्रियापद याद रखो : चलेगा, भायेगा, माफिक है, पसन्द है।

सुखी होना है तो सांसारिक विषयों से प्रेम मत करो।

सुन्दर कपड़े बिगड़ न जायें इस कारण मन्दिर में मनुष्य भगवान् को साष्टांग प्रणाम नहीं करता।

सुन्दरता का अभिमान मत करो। किसी भी जीव को छोटा गिनने वाले की भक्ति सिद्ध नहीं होती। जहाँ नजर जाये वहीं ईश्वर-दर्शन और दीन-भाव प्रभु को प्रसन्न करने के साधन हैं। मैं निरभिमानी हूँ-ऐसा जो समझे उसमें भी सूक्ष्म अभिमान है।

सुन्दर भवनों और भोग-विलास में लिप्त रहने वाले व्यक्ति उपनिषदों के अधिकारी नहीं हैं।

सुन्दर स्त्री को देखो तो उसमें माता की भावना करो। इससे तुम्हारे मन में काम-भावना जाग्रत नहीं होगी। इसी तरह सब में श्रीकृष्ण को देखो।

सुबह, दोपहर एवं सायंकाल-रोज तीनों समय भगवान् की स्तुति करो। साथ ही सुख, दुःख एवं मरण-समय में भी स्तुति करो।

सुवर्ण से समय की क़ीमत ज्यादा होती है।

सूर्य की तरह परोपकार करो, किन्तु अभिमान मत करो।

सूर्योदय से पूर्व स्नान करके सूर्य को अर्घ्यदान करो।

सेवा और स्मरण बिना जिसे चैन न पड़े, वह वैष्णव।

सेवा करते समय रोमांच हो, एवं आँखों में आँसू आवे तो सेवा सधती है।

सेवा, जप, ध्यान ये तीनों रोज करो। तीनों नहीं होवें तो एक साधन में ही दृढ़ निष्ठा रखो।

सेवा में प्रमाद करने वाले का पतन होता है।

सोलहवें वर्ष जीवन में मनोमंथन आरंभ होता है। जब मन में वासनारूपी विष उत्पन्न होवे, उस समय मन्दराचल पर्वत की तरह मन को स्थिर करो। इस मंथन से संसार में से भक्ति और ज्ञान-रूप अमृत निकलेगा।

सौन्दर्य सिर्फ कल्पना है। तुम्हें जो सुन्दर लगे वह दूसरों को सुन्दर नहीं लगता। सौन्दर्य नेत्रों में है।

स्त्रियों की अधिक अधीनता पाप है।

स्त्री, कपड़ा, धन से सुख मिले तो उनके वियोग में दुःख होगा। तुम्हारा आनन्द किसी के अधीन नहीं होना चाहिए। अधीन होगा तो दुःख होगा ही।

स्त्री का धर्म है कि वह रोज तुलसीजी एवं पार्वतीजी का पूजन करे।

स्त्री को स्त्री रूप में मत देखो – ब्रह्मरूप में देखो।

स्त्री, धन, बालक–ये तपस्या में बाधक हैं।

स्त्री, पति के अतिरिक्त किसी साधु-संत के चरण का कभी स्पर्श न करे। साधु-संत की दूर से वंदना करे। शास्त्र की यही मर्यादा है।

स्त्रीसंग, कामसंग नहीं है, किन्तु सत्संग है। ऐसी स्त्री माँगो जिसका झुकाव भगवान् की तरफ हो।

स्त्री स्त्री की मर्यादा में और पुरुष पुरुष की मर्यादा में रहें।

स्नान के बाद एकान्त में प्रभु की उपासना इस प्रकार करो–

(1) सेवा-पूजा

(2) स्तुति

(3) कीर्तन

(4) सत्संग, वाचन (गीता, रामायण, भागवत आदि)

(5) समस्त कर्मों का समर्पण। कोई पाप हुआ हो तो उसका प्रायश्चित्त करो। किये हुए कर्मों का फल प्रभु को अर्पण करो

स्वतंत्र वह है जो जितेन्द्रिय है। स्वतंत्रता मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनाती है। स्वतन्त्र मत बनो, किसी संत को गुरु मान कर उनके अधीन रहो। गुरु बनाने से पूर्व देख लो कि जिसे गुरु मान रहे हो वह गुरु बनने लायक है भी, या नहीं।

स्वदोष का वर्णन करो और भगवान् के गुणों का बखान करो। इससे भगवान् को तुम पर दया आयेगी।

स्वदोष-दर्शन ईश्वर-दर्शन के समान फलदायी है।

स्वभाव अत्यन्त शीतल रखो। काल, धर्म, स्वभाव आदि प्राणियों को कष्टदायी बनाते हैं।

स्वभाव के अधीन मत बनो। स्वभाव को अपने अधीन करो। खूब सत्कर्म करो। जप, ध्यान तथा सत्संग से स्वभाव सुधरता है।

स्वभाव जल्दी नहीं सुधरता। सत्कर्म-जनित पुण्य की वृद्धि से ही स्वभाव सुधरता है।

स्वयं खाने की अपेक्षा दूसरों को प्रेम से खिलाने में हजार-गुना आनन्द मिलता है।

स्वाद लिये बिना शरीर को पोषण देने वाला भोजन करो।

स्वार्थ मनुष्य को पागल बनाता है। स्वार्थ के जाग्रत होने से वह दूसरों का काम बिगाड़ने लगता है। दूसरों के अहित करने वाले का कभी भला नहीं होता।

*** ह ***

हाय-हाय करके हृदय मत जलाओ। आज से ही हरि-हरि जपने की आदत डालो। अभी से ही श्रीहरि का स्मरण करोगे तो अन्तकाल में श्रीहरि याद आयेंगे।

हितभाषी तथा मितभाषी व्यक्ति सत्यवादी बन सकता है।

हो सके तो मत्स्यावतार-चरित्र का पाठ करना। मध्य रात्रि में रास-पंचाध्यायी का पाठ करना।

हृदय में श्रीकृष्ण रहेंगे तो दुःख का असर नहीं होगा।

हृदय से राम के निकल जाने पर मनुष्य कामांध होता है।

–o–

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

संत डोंगरे जी महाराज
का
आध्यात्मिक साहित्य

भागवत रहस्य

संतवाणी

ज्ञान निर्झर

सूक्ति सुधा

तत्वार्थ रामायण

नीता प्रकाशन

ए-4, रिंग रोड, साउथ एक्सटेन्शन भाग-1, नई दिल्ली-110049
दूरभाष : 24636010, 30, 22, फैक्स : (91-11) 24636011
E-mail: info@neetaprakashan.com
url: www.neetaprakashan.com

गोविन्द की गति गोविन्द जाने
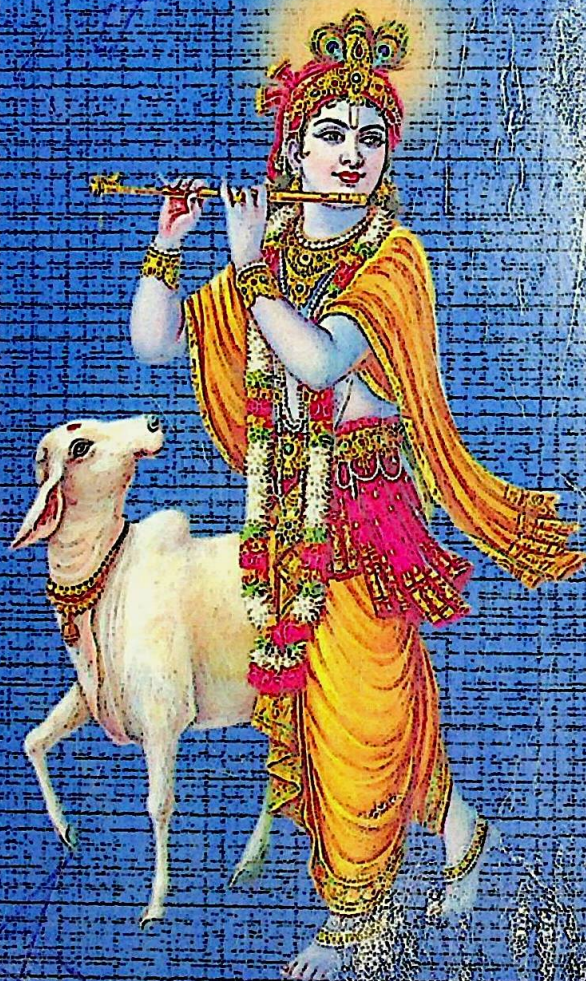
महादेवी ज्ञानकेन्द्र
नई दिल्ली - 110049

मूल्य 30.00